वर्ष 46 अंक: 5 02.12.2023 शनिवार (नवंबर-दिसंबर) वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या श्रीजी भक्तिस्तु सर्वदा ॥

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

11 अक्तुबर – गुरुहरि काकाजी महाराज के स्मृति पर्व पर पूज्य मल्कानी अंकल की चित्र प्रतिमा की स्थापना...

स्मृति पर्व निमित्त महापूजा एवं महाप्रसाद...

11 अक्तुबर 2023, गुरुहरि काकाजी महाराज का अभूतपूर्व स्मृति पर्व...

गुणातीत समाज का एक भी केन्द्र ऐसा नहीं है कि जिन्हें **गुरुहरि काकाजी महाराज** के संकल्प से सत्संग में जुड़े, **पू. इन्द्रू मल्कानी साहेब** का परिचय ना हो और उनकी सेवाओं से लाभान्वित ना हुए हों।

मूलतः 16 मार्च 1986 को गुरुहरि काकाजी महाराज की श्रद्धांजलि सभा निमित्त **प.पू. गुरुजी** से **पू. मल्कानी अंकल** घनिष्ठता से ऐसे जुड़े कि फिर दिल्ली मंदिर का अभिन्न अंग बन कर, दिल्ली मंदिर के 80 प्रतिशत निर्माण कार्य में उन्होंने अपना पूर्ण सहयोग दिया। साथ ही साथ, **गुरुहरि काकाजी महाराज के सर्वदेशीय सिद्धांतों से सबकी अगुवाई करने वाले, प.पू. गुरुजी के श्रीमुख से बृहद गुणातीत समाज का माहात्म्य अंतर में भर कर, पू. मल्कानी अंकल सभी के सुहृद बने।** फलस्वरूप उनके जीव में सत्संग ऐसा बस गया कि सांसारिक व्यवहार गौण हो गया एवं **गुरुहरि पप्पाजी महाराज के वचनानुसार प्रथम प्रभु, फिर कदम बढ़ाना—उनकी जीवनशैली बन गई** और... जैसे कि **गुरुहरि काकाजी महाराज** ने **भारत माता मंदिर** के प्रांगण में **प.पू. गुरुजी** को आशीर्वाद देते हुए कहा था—

तूझे ऐसा व्यक्ति मिलेगा कि जो अपने यश के लिये नहीं,
बल्कि तेरे वचन पर आत्मीयता से सेवा करेगा...

वाक़ई, पू. मल्कानी अंकल ने कोई अपेक्षा रखे बिना अपनेपन से सबकी सेवा करी। कहा जाता है कि एक हाथ से दान करो, तो दूसरे हाथ को पता न चले... इसी प्रकार पू. मल्कानी अंकल ने निरपेक्षभाव से सभी की सेवा की। प.पू. गुरुजी के साथ गुरु-शिष्य का तो संबंध था ही, लेकिन श्री कृष्ण-अर्जुन जैसी मित्रता भी थी। इसलिये पू. मल्कानी अंकल का जब अचानक अवसान हुआ और covid protocol की वजह से उन्हें भावभीनी विदाई देने के लिये गुणातीत समाज असमर्थ हुआ, तो प.पू. गुरुजी को अंतर में यह बात कचोटती रही।

जिस **चिदाकाश हॉल** में **प.पू. गुरुजी** सारे दिन विराजमान रहते हैं, वहाँ एक तरफ चित्र प्रतिमाओं का मंदिर है और दोनों तरफ की दीवारों पर चारों ओर गुणातीत स्वरूपों, संतों एवं गुणातीत समाज के प्रति पूर्ण समर्पित आत्मीय मुक्तों की चित्र प्रतिमायें लगाई हुई हैं। सितंबर महीने में प.पू. गुरुजी ने मंदिर के संतों-मुक्तों के समक्ष इच्छा व्यक्त की कि **11 अक्तुबर** को **गुरुहरि काकाजी महाराज स्मृति पर्व** निमित्त स्थानीय मुक्त दोपहर को धुन करके महाप्रसाद लेने के लिये एकत्र होंगे, तो उस दिन **पू. मल्कानी अंकल** की सेवा व समर्पण को नमन करते हुए, उनकी **चित्र प्रतिमा** चिदाकाश हॉल में स्थापित करके उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करें। सभी ने

हर्षपूर्वक अपनी सहमति दी और फिर इस हेतु दिल्ली में रहते पू. मल्कानी अंकल के बड़े सुपुत्र **पू. अजय मल्कानीजी** एवं सिंगापुर में रहते छोटे सुपुत्र **पू. विकास मल्कानीजी** से प.पू. गुरुजी ने स्वयं सारी बात करके, उन दोनों के हाथों से प्रतिमा स्थापित करने के लिये कहा। साथ ही साथ, गुरुहरि काकाजी महाराज के स्मृति पर्व निमित्त पंजाब के भक्तों को भी आमंत्रित करने प.पू. गुरुजी ने सेवकों से कहा। तो, वहाँ से भी तकरीबन 40-50 मुक्त भक्ति अदा करने दिल्ली आने के लिये तत्पर हुए।

अक्तुबर के प्रारंभिक दिनों में प.पू. गुरुजी ने बीमारी ग्रहण की, जिसके कारण पू. डॉ. प्रवीण शर्मा और डॉ. कैलाश सिंहजी की सलाह पर दो रात्रि वे अपोलो अस्पताल में रहे। प.पू. गुरुजी के प्रति अद्‌भुत लगाव के वश उनका स्वास्थ्य देखने के लिये, **प.पू. वशीभाई** ने भी **पू. अश्विनभाई** के साथ गुरुहरि काकाजी के स्मृति पर्व के दिन दिल्ली आने का कार्यक्रम बनाया। अतः 11 अक्तुबर सुबह करीब 10:00 बजे **पू. मैत्रीशीलस्वामीजी** ने कल्पवृक्ष में महापूजा आरंभ की। प्रति वर्ष की भाँति गुरुहरि काकाजी महाराज के स्मृति पर्व पर धुन करके महापूजा का विसर्जन हुआ। तत्पश्चात् निम्न प्रकार से **पू. अजय मल्कानीजी** एवं **पू. विकास मल्कानीजी** ने पू. मल्कानी अंकल के मंदिर व स्वरूपों के साथ के संबंध को याद करते हुए प्रासंगिक उद्‌बोधन किया और **प.पू. वशीभाई** तथा **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद दिया...

पू. अजय मल्कानी

*...अंकल की चित्र प्रतिमा की सॅटिंग के बारे सोचते हुए मुझे मन में ऐसा होता था कि **गुरुजी क्या सोचते हैं? कब सोचते हैं? किसके लिये सोचते हैं? क्यों सोचते हैं? इन चीजों का हम जन्मभर विचार करते रहेंगे, तो भी समझ नहीं पायेंगे कि वे किसलिये और क्यों कर रहे हैं? इसका कोई उत्तर तो है नहीं।** अंकल की फोटो लगेगी, वे तो मंदिर से बहुत जुड़े हुए थे... मेरे ख्याल से यह बहुत अच्छी चीज़ होगी कि हम रहें न रहें, पर वे मंदिर के इतिहास का एक हिस्सा बने रहेंगे। जैसे हम शुरुआत में आये, तो फोटोज़ वगैरह देख कर हम पूछते थे कि ये कौन है? वे कौन है? इसी प्रकार, जो भविष्य में आयेंगे, वे भी पूछेंगे। तो उस हिसाब से फिर अंकल की memory alive रहेगी। जय स्वामिनारायण!*

पू. विकास मल्कानी

...मेरा ऐसा ख्याल है कि हर आदमी को अपनी life में एक support system चाहिये होता है। हर आदमी की life में ऊपर-नीचे तो होता ही रहता है। अगर आपके पास family है, तो up और down, अच्छा या बुरा समय आता है। अगर आपके पास business या job है, तो up और down बढ़ जाता है। दुनिया में इतनी चीजें होती रहती हैं, पर उसके ऊपर किसी का

control नहीं है। News से ख्याल पड़ता है कि दुनिया में क्या-क्या हो रहा है? यह कोई मायने नहीं रखता कि आप कितने बड़े या छोटे हो? life में ऊपर-नीचे तो होना ही है और इसी वजह से हर आदमी को एक सहारा चाहिये होता है। हमने देखा कि डैड-मल्कानी अंकल की life में— health, family, business में बहुत ups और downs हुए... कभी-कभी ऐसा समय आता है कि चार-पाँच साल आदमी एकदम उड़ता है। लेकिन फिर ऐसा समय भी आता है कि आदमी सोचता है कि अब आगे कैसे बढ़ेंगे? तो, मेरा ऐसा विश्वास है कि ***आदमी खुद अपने ऊपर depend होकर इन चीजों से निकल नहीं सकता। इसलिये दुनिया में कितना depression है? कितने लोग suicide कर लेते हैं? सो, हर आदमी को एक सहारा चाहिये और गुरुजी के साथ का संबंध डैड के लिये एक spiritual support system (SSS) बन गया! उनकी life में भले ही चीजों पर उनका कंट्रोल नहीं रहता था, लेकिन गुरुजी के साथ का संबंध control में रहता।*** वे गुरुजी से रोज़ फोन पर बात करते... कभी गुरुजी मानो किसी के साथ बात कर रहे होते या बाथरूम में होते, तो वे message छोड़ देते थे कि गुरुजी को मेरा जय स्वामिनारायण कहना। और... फिर गुरुजी भी जय स्वामिनारायण का जवाब देने फोन करते। वो बस गुरुजी से connection की बात थी कि एक तरह से उनके दर्शन हो जाते... ***मेरा तो ऐसा विश्वास है कि गुरुजी से मिले spiritual support system के कारण वे हर प्रकार से आगे बढ़ते रहे। अगर यह नहीं होता, तो वे टूट जाते।*** जब आदमी का बुरा समय आये, तो खाली उसे ही सहन करना मुश्किल बात नहीं है, आदमी का जब अच्छा समय आता है, तो उसे सहन करना भी मुश्किल बात है। क्योंकि तब ego-pride से सब सारी गलत चीजें हो जाती हैं। तो ***डैड का जो spiritual support system बना रहा, उसने उनकी रक्षा की, बल दिया और स्थिरता प्रदान की और हम लोग भी यहाँ आज गुरुजी और उनकी वजह से हैं। हमें भी spiritual support system बना कर रखने का मौका मिला है। तो, हम लोग भी यह बना कर रखेंगे, तो मल्कानी अंकल बहुत खुश होंगे।*** सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. वशीभाई

...विकासभाई ने बहुत अच्छा बताया कि कुछ नया नहीं करें, तो वो गुरुजी नहीं। काकाजी के स्मृति (श्राद्ध) पर्व के दिन मल्कानी साहेब की फोटो स्थापना करने के लिये गुरुजी को बहुत-बहुत धन्यवाद-प्रणाम। श्राद्ध का पर्व चल रहा है। हमारे शास्त्रों में पुरखों को याद करना भी एक संस्कार है। लोग गया में, नासिक में श्राद्ध करने जाते हैं। पर, गुरुजी ने कितना अच्छा किया कि अड़सठ तीर्थ संत के चरणों में। तो, सब तीर्थ यहीं और सब यहीं करा दो, तो सब दिव्यता से हो जायेगा। गुरुजी ने श्राद्ध को दिव्य बना दिया। राकेशभाई ने जैसे बताया कि गुणातीतानंदस्वामी,

कृष्णजी अदा और काकाजी का स्मृति पर्व है। तो, ***हमारे गुरुहरि काकाजी जैसे बड़े पुरुष का श्राद्ध तो होता नहीं है, लेकिन उनकी स्मृति करने का दिन है। तो उनकी स्मृति करना, उनके दिव्य गुणों को याद करके उसमें निमग्न रहने की भी आज्ञा महाराज ने दी है। गढडा मध्य के चौथे वचनामृत में*** *ब्रह्मानंदस्वामी ने महाराज से पूछा कि भगवान जब पृथ्वी पर प्रत्यक्ष नहीं परोक्ष होंगे, तब क्या करेंगे? तो,* ***महाराज ने बताया कि भगवान का अखंड चिंतन करना, उनकी स्मृति में रहना। वो भगवान का सबसे बड़ा पूजन-अर्चन है।*** *तो इसीलिये गुरुजी सब ऐसे प्रसंग बनाते हैं। तो, आज हमेशा के लिये कितनी बड़ी दिव्य स्मृति हो गई कि काकाजी के श्राद्ध के दिन गुरुजी ने मल्कानी साहब के फोटो का पूजन करके, उसे चिदाकाश हॉल में लगाने का संकल्प किया था।* ***गुरुजी ने श्राद्ध के निमित्त स्मृति करने मर्म भी कितना दिव्य-eternal बना दिया।*** *महाराज ने वचनामृत में अखंड स्मृति का उल्लेख किया है। श्रीकृष्ण भगवान पृथ्वी पर आये थे, मानवस्वरूप धारण किया था, तो आज भी उनका नाम भूमंडल में कहीं भी कोई लेगा, तो वो उन्हें पहुँचता है। काकाजी जैसे बड़े पुरुष भी काळातीत होते हैं। तो, भगवान के स्मरण की दिव्य भावना आज गुरुजी ने श्राद्ध-स्मृति दिन सबसे करायी।*

मल्कानी साहेब की फोटो के लिये तो क्या कहें? इसमें भी ***काकाजी के प्रति गुरुजी की कितनी बड़ी छुपी भक्ति है! ब्रह्मप्रवाह पुस्तक में काकाजी ने गुरुजी को लिखा है कि जिसने भी सत्संग की नींव में हमें सहाय की हो, उसे भूलना नहीं। हम तो सब भूल गये, लेकिन गुरुजी ने मल्कानी साहेब के समर्पण को कितना याद रखा?***

...आज काकाजी के स्मृति दिन पर महापूजा करके नीचे मल्कानी साहेब की फोटो रखेंगे। जो कोई भी नया आयेगा, तो पूछेगा कि ये कौन हैं? फिर बतायें कि ये मल्कानी साहेब हैं, ऐसे-ऐसे इन्होंने सेवा की थी। तो उनकी सेवा काळातीत हो गई। ये गुरुजी की स्टाइल है। जैसे तीन फरवरी पार्क नाम रखा है, तो कोई पूछेगा कि तीन फरवरी क्या है? तो बताया जायेगा कि हमारे काकाजी का साक्षात्कार दिन है। फिर सारी हिस्ट्री बता दी जायेगी... ***मल्कानी साहेब*** *जब भी हमें मिलते थे तो मुझे एक बात कहते थे कि* ***वशीभाई! आप हमेशा योगीजी महाराज की ओर दृष्टि रखना। जैसे कि विकासभाई ने 'SSS' बताया, ऐसे ही अंकल योगीजी महाराज के बारे 'SSS' बताते थे— The simplicity of Yogiji Maharaj 'S'. The saintliness of Yogiji Maharaj 'S' साधुता और The serenity of Yogiji Maharaj 'S'.*** *वे कहते थे कि मैंने सारी साधना का अध्ययन किया है... सब देखने के बाद मैं आपको ये कहता हूँ।* ***गुरुजी के साथ उनका high quality का relation था। इसलिये जब मल्कानी अंकल धाम में गये, तब से गुरुजी उन्हें बहुत miss करते हैं, भले ही बोलते नहीं हैं। उन्हें ऐसा हुआ कि कोरोना के कारण मल्कानी अंकल के अंत समय में उनका सम्मान नहीं कर पाये...*** *गुरुजी के साथ उनका एक*

*bond था, जो विकासभाई ने अच्छी तरह बताया। हम सबको भी वो सीखने जैसा है। **गुरु के साथ ऐसा bond होना चाहिये; गुरु के हृदय में अपना स्थान होना चाहिये।** ऐसा संबंध कराने के लिये गुरुजी हम सबको ऐसी ट्रेनिंग देते ही रहते हैं, देते ही रहते हैं, देते ही रहते हैं... भगवान स्वामिनारायण ने **गढडा प्रथम के 54** में भगवान और भगवान के भक्तों के साथ आत्मबुद्धि करने की बात कही है। गुणातीतानंदस्वामी का भी आज स्मृति पर्व है। गुणातीतानंदस्वामी को महाराज ने जूनागढ़ में रखा और सबको आज्ञा करी कि वर्ष में एक मास जूनागढ़ जाकर गुणातीत का समागम करना। **गुणातीतानंदस्वामी के पास जो भी जाता, तो उसे सत्संग-भक्ति सब कराते थे। ऐसे ही गुरुजी मई के महीने में शिविर कराते हैं, ताकि हम उसका पूरे साल revision करें...***

*अभी भजन बज रहा था—आनंद करो, भाई आनंद करो। **गुरुजी, दिनकरभाई, भरतभाई भी बोलते हैं आनंद करो, भाई आनंद करो। तो, हे गुरुजी! आप तो हैं ही आनंदस्वरूप। जहाँ-जहाँ आप जाते हैं, बोलते हैं, चलते हैं वहाँ आनंद ही हो जाता है...** गुरुजी यहाँ रहकर और गुणातीत पुरुष हमें सत्संग, भजन और भक्ति का वारसा देकर इतना अच्छा माहौल बनाते हैं। गुणातीत ज्योत का एक भजन है— कलियुगमां सतयुग रे। बाहर कलियुग है, लेकिन हमारे सत्संग में सतयुग है। यहाँ बैठे हैं तो पूरी दुनिया की शांति है, कोई तकलीफ नहीं। तो ऐसे संतों के पास, गुरुजी के पास सब solution है। अजय और विकास भइया को खूब धन्यवाद कि उन्होंने गुरुजी के साथ ऐसा संबंध रखा है... आज आंटी को भी खूब-खूब याद करते हैं। हे महाराज, उनकी भी तबियत अच्छी रहे... सब भक्तों को भी धन्यवाद है कि आज working day होते हुए भी सब आये और पंजाब से तो 40 भक्त आ गये, उनको भी बहुत-बहुत धन्यवाद है। गुणातीतानंदस्वामी, कृष्णजी अदा और काकाजी महाराज के श्राद्ध के सबको भावभरे जय स्वामिनारायण।*

प.पू. गुरुजी

*...**मल्कानी अंकल के साथ हमारा बहुत गहरा संबंध। ये जो आज मंदिर है, वो मल्कानी के कारण ही है। दरअसल कहें तो ये काकाजी के कारण ही है।** क्योंकि मल्कानी अंकल मुझे काकाजी की देन हैं। मुझे याद है हम काकाजी के साथ हरिद्वार गये थे। वहाँ भारत माता मंदिर में अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति प्रमुखस्वामी ने पधराई है। उसका दर्शन करने हम ऊपर तक गये थे। नीचे उतरने के बाद काकाजी बहनों के साथ बातचीत करने लगे, तो हम वहाँ लगाये गये बोरसद के एक पटेल के statue के बारे में पढ़ने लगे। उन्होंने उस ज़माने में ग्यारह लाख, ग्यारह हज़ार, एक सौ ग्यारह रुपए का दान दिया था—ऐसा लिखा हुआ था। उन दिनों अपने*

मंदिर में पैसे की खींचतान थी। तो, मैंने सोचा कि काकाजी आयेंगे, तो उन्हें ये पढ़ायेंगे। काकाजी आये और मैंने उन्हें पढ़वाया। काकाजी समझ गये कि ये मुझे क्यों पढ़वा रहा है। तो, काकाजी एकदम बोले आज तूने मुझे गरम कर दिया। मेरे पास से कोई काम कराना हो, तो मुझे गरम करना पड़े—excite करना पड़े। तो कहने लगे, ***आगे जाकर तुम्हें एक ऐसा व्यक्ति मिलेगा जो इससे अधिक सेवा करेगा, तुम्हारा मंदिर बनायेगा। लेकिन, मेरे वचन से नहीं तेरे वचन से करेगा।*** *हमने सोचा चलो आज एक काम हो गया। काकाजी अब कहीं set करेंगे। मैंने सोचा कि इनकी तो बोलने की रीत है, बाकी करना तो इन्हें ही पड़ेगा। पर, थोड़े समय के बाद तो काकाजी स्वधाम चले गये और उन दिनों मल्कानी अंकल उनकी श्रद्धांजलि की सभा में आये थे। तब इन्होंने देखा कि जितने वहाँ बैठे हैं, हरेक की आँखों में आंसू थे। उस समय तो वे कुछ बोले नहीं, लेकिन जाते हुए मुझसे कहा—गुरुजी, आप एक बार मेरे office आना, मुझे कुछ बात करनी है। फिर मैं office गया तो अंकल ने कहा—देखो, उस दिन मैंने देखा कि what a vacuum is created by the demise of Kakaji... आप चिंता नहीं करना, मैं आज आपको (amount) देता हूँ। तो, इन्होंने मंजुल साहेब से कहा कि आज की जो अपनी sale है, वो पूरी गुरुजी को दे दो। मुझे वो अभी भी याद है और उस दिन का amount मंजुल साहेब ने हमें दिया। फिर* ***मल्कानी ने कहा कि ये मेरी शुरुआत है, but I am with you till the last brick of the temple.*** *उस समय हमारे साथ हरीश मेहता था, वो तो विचार में पड़ गया... अंकल संपर्क में आये, उससे पहले बच्छराज ने भी मुझसे कहा था कि गुरुजी, मल्कानी अगर अपने साथ जुड़ जाये, तो मंदिर बनाने की problem solve हो जाये। दरअसल, बच्छराज भी देखता था कि यहाँ रोज़ पैसे की खींचतान चलती रहती है। तो, मैंने उसे कहा था कि तू संकल्प कर कि मल्कानी मंदिर आ जायें। तो, बच्छराज ने मल्कानी को कुछ बातें करी। उस समय नगीनभाई का भाई मुकेश मल्कानी को मंदिर लेकर आया था। तो यूँ आज ये जो मंदिर है, वो मल्कानी के कारण ही बना है।* ***मेरा यही कहना है कि जिस intimacy से मल्कानी ने मंदिर का संबंध रखा है, ऐसे अजय, विकास और पूरा family रखे,*** *यही आज के दिन की शुभकामना है।*

इस विशिष्ट सभा के अंत में जगरांव के **पू. अनूप टांगरीजी** ने **'मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है'** भजन प्रस्तुत किया। फिर **पू. मल्कानी अंकल** की चित्र प्रतिमा पू. अजय मल्कानीजी के छोटे सुपुत्र **पू. विवेक** अपने हाथों में लेकर सबके साथ **चिदाकाश हॉल** में गये और... वहाँ **पू. अजय मल्कानीजी, पू. विकास मल्कानीजी** एवं **पू. विवेक** ने मिल कर वह चित्र प्रतिमा लगाई। तत्पश्चात् सबने प्रति वर्ष की तरह गुरुहरि काकाजी महाराज के स्मृति पर्व का महाप्रसाद लिया। महाप्रसाद लेकर पंजाब से आये मुक्त बस से लौट गये और स्थानीय मुक्तों ने भी प्रस्थान किया।

24 अक्तुबर, दशहरा–प.पू. गुरुजी की निश्रा में
पू. सुहृदस्वामीजी का 59वाँ जन्मदिन...

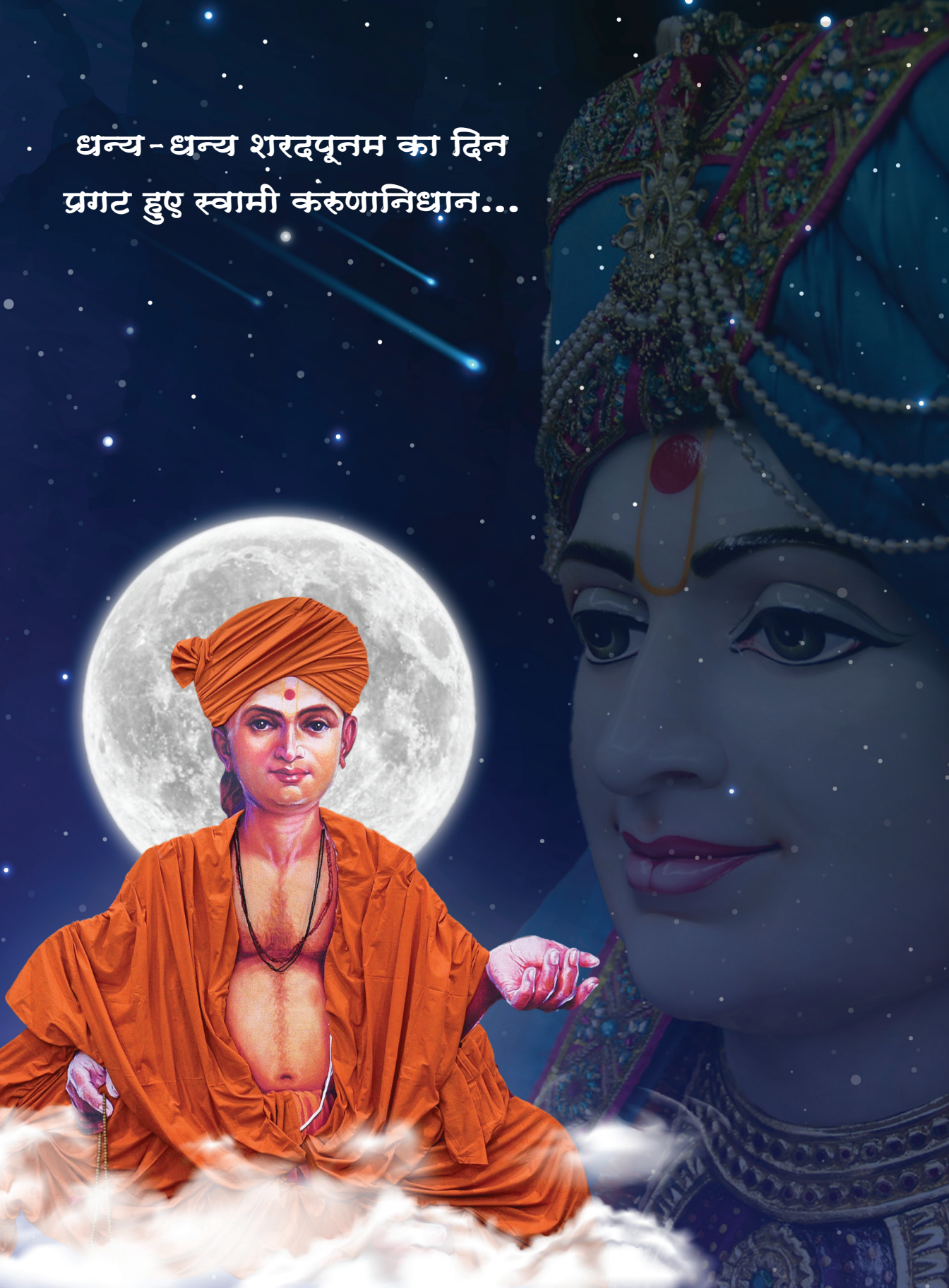
धन्य-धन्य शरदपूनम का दिन
प्रगट हुए स्वामी करुणानिधान...

29 अक्तुबर – शरदपूर्णिमा निमित्त सभा एवं आरती...

10 नवंबर – धनत्रयोदशी निमित्त महापूजा...

12 नवंबर – प्रकाश के त्यौहार पर शारदा पूजन...

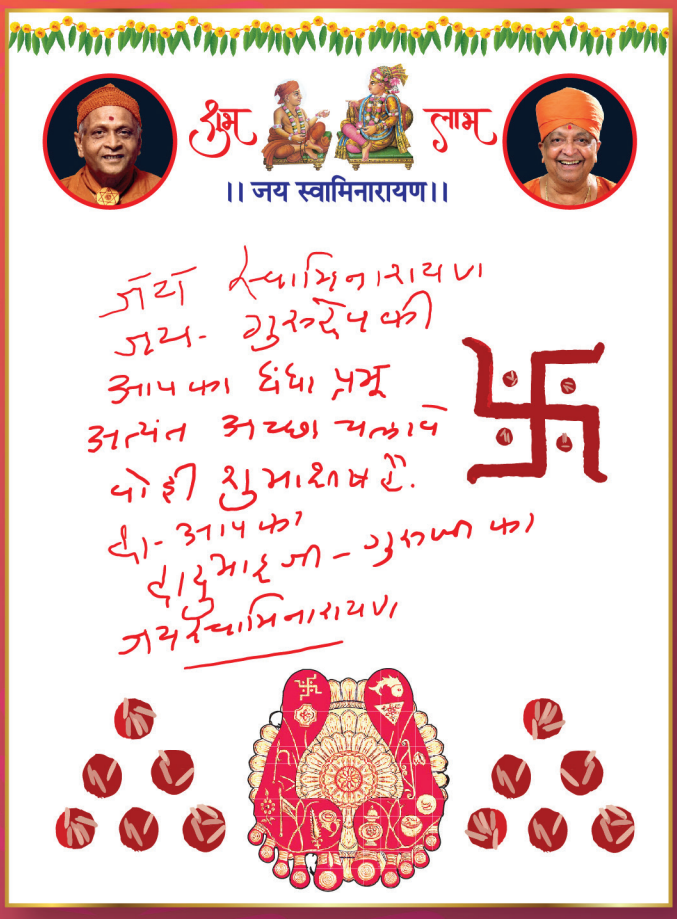

दीपावली निमित्त महापूजा एवं प्रगट प्रभु का पूजन

13 नवंबर – नूतन वर्ष सभा...

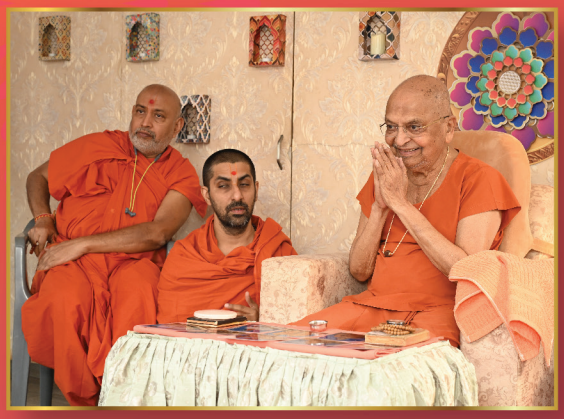

अन्नकूट थाल...

प्रभु को नहीं कोई स्वाद, ये तो भक्तों के भाव ग्रहण करें...

अन्नकूट आरती – केवल वंदन से ही संकट मिट जायें...

अन्नकूट महाप्रसाद का वितरण...

अन्नकूट समापन की सेवाएं

2023 की शरद ऋतु-दीपोत्सव के संदर्भ में ताड़देव-दिल्ली मंदिर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम...

24 अक्तुबर, दशहरा

असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक है—**दशहरा**! 1965 में आज ही के दिन **गुरुहरि योगीजी महाराज** ने **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी** एवं उनके उत्तराधिकारी **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी** को पार्षदी दीक्षा देकर गुणातीत समाज को एक अनमोल भेंट दी; जिन्होंने अपने गुरु के बल से इंद्रियों-अंतःकरण को परास्त करके, केवल प्रभु की मूर्ति धार कर जीने का आदर्श स्थापित करके साधकों को मार्गदर्शन देकर निहाल किया। **गुरुहरि काकाजी महाराज** एवं सभी गुणातीत स्वरूपों द्वारा दीक्षित, दिल्ली मंदिर को सर्वप्रथम उपहार रूप दिये अनमोल संत **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी** का जन्मदिन भी इसी मंगलकारी दिन होता है। इस बार **59 साल** पूरे करके वे **षष्ठीपूर्ति** वर्ष में प्रवेश कर रहे थे, सो **प.पू. गुरुजी** की निश्रा में कल्पवृक्ष हॉल में स्थानीय मुक्तों ने भक्तिभाव से उनका जन्मदिन मनाया। सभा की शुरुआत में **पू. राकेशभाई शाह** एवं **सेवक पू. विश्वास** ने प्रार्थना रूप ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी का भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् **पू. अक्षरस्वरूपस्वामीजी, सेवक पू. विश्वास, पू. समीरभाई दवे, पू. सुनील मग्गुजी** एवं दिल्ली मंदिर से अल्प समय में ही घनिष्ठता से जुड़े **पू. अभिषेक नंदाजी** ने पू. सुहृदस्वामीजी की कई छुपी सेवाओं का वर्णन करते हुए उनका गुणानुवाद किया। **पू. सुहृदस्वामीजी** ने प.पू. गुरुजी के श्रीचरणों में आशिष याचना की कि—

...गुरुजी, जिस हेतु आपने मुझे साधु बनाया, तो साधु की वह कक्षा—गुणातीतभावना वाला साधु बनाना और जीवन की अंतिम सांस तक आपके भक्तों की निर्दोषबुद्धि से सेवा हो पाये, ऐसे आशीर्वाद देना...

तत्पश्चात् **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा—

...सभी ने सुहृदस्वामी के गुणों का ब्योरा दिया। सुनकर ऐसा लगा कि हमें कुछ आता हो न आता हो, लेकिन एक चीज़ समझ कर रखें कि सुहृदस्वामी जिस रास्ते चले हैं; जिस दिशा में चल रहे हैं, उनके पीछे-पीछे हम चलते रहेंगे, तो अक्षरधाम हमारे लिये दूर नहीं हो सकता! क्यों? क्योंकि सुहृदस्वामी की निगाह हमेशा ये रही है कि काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी इन सबकी ओर निगाह रख कर सबकी सेवा करनी है। तो, स्वाभाविक है कि सुहृदस्वामी के पीछे-पीछे हम जितने अग्रसर रहेंगे, उतनी अक्षरधाम की consciouness में रहते हुए हम सत्संग की सेवा कर पायेंगे—ये करते रहें यही प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी से आशीष पाकर पू. सुहृदस्वामीजी ने उन्हें हार अर्पण किया और प्रसादी का यह हार ईटेड़ा के **पू. भीम यादवजी** एवं **पू. प्रमोदजी** ने पू. सुहृदस्वामीजी को जन्मदिन निमित्त पहनाया। आज तारीख और तिथि दोनों के अनुसार **पू. समीरभाई दवे** का जन्मदिन था, सो प्रभु प्रेरित होकर पू. सुहृदस्वामीजी ने प्रसादी का यह हार उन्हें पहनाया। सभा के अंत में **पू. पंकज रियाज़जी** ने 'मुझे तुमने काका बहुत कुछ दिया...' प्रस्तुत करके समापन किया और... दशहरा निमित्त फाफड़ा-जलेबी का विशिष्ट प्रसाद लेकर सभी अपने गंतव्य स्थान पर गये।

29 अक्तुबर, शरदपूर्णिमा

भगवान स्वामिनारायण के बिना जिनका अस्तित्व नहीं और जिनके बिना भगवान स्वामिनारायण स्वयं पूर्ण नहीं, ऐसे शाश्वत् गुरु **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** का प्रादुर्भाव दिन यानि **शरदपूर्णिमा** प्रगट के आश्रितों के लिये सच्ची दीपावली के समान है। इस वर्ष यह शुभ दिन **28 अक्तुबर** को था, परंतु **चंद्रग्रहण** होने के कारण **29 अक्तुबर** को यह पर्व मनाने सब कल्पवृक्ष हॉल में एकत्र हुए। सायं आरती के पश्चात् 6:30 से 8:00 **प.पू. दीदी** के सान्निध्य में **बहनों** व **भाभियों** ने भजनों पर **गरबा** करके भक्ति अदा की। तत्पश्चात् 8:15 से 9:00 बजे तक सबने **दूधपौआ** का विशिष्ट प्रसाद लिया और 9:15 बजे **प.पू. गुरुजी** की निश्रा में सभा का लाभ लेने इकट्ठे हुए। प.पू. गुरुजी के आसन के पीछे गहरे नीले आकाश में चंद्रमा की चाँदनी में भगवा रंग से भरी मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की आउटलाइन मूर्ति का दर्शन हो रहा था और... भजन की पंक्ति लिखी थी—

धन्य-धन्य शरदपूनम का दिन, प्रगट हुए हैं स्वामी करूणानिधान...
भला करने पधारे स्वामी इह लोक में...

पू. राकेशभाई ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के प्रागट्य के भजन गाकर सभा का आरंभ किया। सर्वप्रथम सत्संग के दो छोटे बच्चों—**पू. संबंध** एवं **पू. जपेश** ने स्वामी की बातें बोल कर मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी माहात्म्यगान किया। सालों पहले मंदिर से जुड़े आर्टिस्ट **पू. दीपक कुमार श्रीवास्तवजी** बहुत वर्षों के बाद मंदिर आये थे। उनके द्वारा की गई सेवाओं को याद करते हुए, आत्मीय स्वजन आर्टिस्ट **पू. अमृतभाई पटेल साहेब** ने उन्हें मंदिर की ओर से स्मृति भेंट देकर सम्मानित किया। तत्पश्चात् 1985 में यानि 38 साल पहले, शरदपूर्णिमा निमित्त गुरुहरि काकाजी महाराज द्वारा अंग्रेजी में लिखित आशीर्वाद रूप लेख का निम्न हिन्दी अनुवाद **पू. राकेशभाई** ने पढ़ा, जिसे प.पू. गुरुजी ने थोड़ा समझाया—

शरदपूर्णिमा

27 अक्टूबर 1985

मानव जीवन का आरंभ ही द्वंद्वों से होता है।

यदि कोई व्यक्ति संतुष्ट, शांतिमय, सुख और आनंदभरा तनावरहित, चिंतामुक्त जीवन व्यतीत करना चाहता है, तो उसे मानवरुप में प्रगट भगवान या सच्चे संत या गुणातीत

(प.पू. गुरुजी – गुणातीत यानि सत्व, रज और तम से परे जो हुए हों, ऐसे संत...)

ब्रह्मस्वरूप सत्पुरुष का योग, उनकी पहचान और उनके साथ आत्मबुद्धि प्रीति का संबंध होना चाहिए। सभी धर्म इस सार्वभौम नियम का समर्थन करते हैं।

अतः सही अर्थ में सुखी होने के लिए सबको – चाहे सन्यासी हों या गृहस्थ-उन्हें ब्रह्मस्वरूप संत, पूर्ण आध्यात्मिक सदगुरु के साथ जुड़ कर उनसे संबंध दृढ़ करना चाहिए।

'नान्यः पन्था' श्रुति से भी यही प्रमाणित होता है कि मन को जीतने का अन्य कोई उपाय नहीं है।

किन्तु, अज्ञान, मलिन आसक्ति और इच्छाएं, स्वार्थ और अहम् से गुमराह होकर व्यक्ति देह के रिश्तेदारों और मित्रों आदि में उलझ जाता है,

(प.पू. गुरुजी – देह के रिश्तेदारों में अपने मन के संकल्प भी आ जाते हैं। मनमानी करने से सही रास्ते से भटक जाते हैं...)

साधक मन और वृत्तियों के चक्रव्यूह में फंस कर, संत की प्राथमिकता भूल कर अंत में निराश और दुःखी होता है।

इसी कारण भगवान स्वामिनारायण ने अपने आश्रितों के लिए **'शिक्षापत्री'** के रुप में आचार संहिता प्रदान करी, जिसका अमल करने से जीवन तनावरहित और चिंतामुक्त होगा।

पर, यदि हम इन नियमों के पालन में युक्ति या इसका उल्लंघन या इसे भंग करते हैं, तो खुद को ही धोखा दे रहे हैं। फिर हमारे दुःख या चिंताओं के लिए संत को दोषी ठहराना अनुचित होगा।

इससे अधिक, हमारी मूलवृत्ति और स्वभावों के शुद्धिकरण, परिवर्तन और रुपांतर के लिए भगवान स्वामिनारायण ने गुणातीत सत्पुरुष द्वारा अपने आध्यात्मिक वारिसदारों की अखंडित श्रृंखला रखी है। भगवान या ऐसे गुणातीत सत्पुरुषों से ही जीव को मुक्ति की राह मिलती है और आत्म साक्षात्कार और एकांतिकी मुक्ति-मोक्ष प्राप्त होता है।

(प.पू. गुरुजी – भगवान या गुणातीत संत मतलब भगवत्स्वरूप संत)

भगवान स्वामिनारायण के अनुग्रह से यह परम्परा जीवंत है। गुणातीत पीढ़ी के ज्योतिर्धर आज भी प्रगट हैं और हमें उनके योग का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

(प.पू. गुरुजी – काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, प्रमुखस्वामी महाराज, महंतस्वामी महाराज का जोग मिल गया, वो अपना परम सौभाग्य है)

ऐसा सुनहरा मौका या इससे बेहतर अवसर मिल नहीं सकता !

दिवाली के शुभाशीष सह,

आपके ही दादुकाका के जय स्वामिनारायण !

(प.पू. गुरुजी – काकाजी ने आशीर्वाद लिख कर भेजे थे)

(Original article in english)

Sharadpurnima,
27th Oct. 85

Human life dawns with dilema.

If one wants to lead a contented, peaceful, happy and joyous life free from worries and tensions, one must know, recogonise and have a close love - intimacy with Godhead or Supremely Realised Saint or Gunatit Brahmaswaroop Satpurush.

This universal law is advocated by all the religions.

So, to be happy in true sense everyone may he be either a sanyasin or a householder must strive to identify himself directly with a Supremely Realised Satpurush- the Perfect Spiritual Master and thus further strengthen his spiritual relationship.

This is testified in shurti also saying – 'Nanayaha Panthaha i.e. there is no other way to win over one's mind.

However, ignorance, filthy attachments & inclinations, selfishness coupled with ego misleads one to involve himself in friends and relatives denying the Saint's preference in one's life ultitimately resulting in disappointments making life still more miserable.

In view of this, Lord Swaminarayan advocated a code of conduct set out in His epistle of precepts- SHIKSHAPATRI, which if truly practised in its letter and spirit shall make one's life free from all worries and tensions.

But if we are to play tricks in obeying these injunctions thus violating and transgressing these rules, then we are deceiving ourselves. It will be then unworthy to blame or say ill of a Saint for our miseries and tensions.

Further, for the purification and total transformation & transfiguration of our unrefined crude nature Lord Swaminarayan guaranteed the continuance of the Spiritual heirarchy for ever in the form of Gunatit Satpurushas. it is only through God or such Gunatit Satpurushas that one can really understand and achieve final salvation and Self Realisation and Ultimate Supramental State of emancipation of Soul.

By His benign Grace this tradition - the unique Spiritual heirarchy is maintained even today and it is our fortune to come in its contact. There can't be a chance or opportunity better than this!

Let us all join hands and celebrate this twi - centenary year of Gunatit Jayanti.

With blessings for Happy Diwali

Yours
DADUKAKA'S Jay Swaminarayan

सभा के अंत में **पू. सरयूविहारीस्वामी** ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी एवं उनके धारक संतों का प्रसंगों से दर्शन करा कर आशीष याचना की। शरदपूर्णिमा के अनुसार **पू. सरयूविहारीस्वामी, पू. आनंदस्वरूपस्वामी** एवं **पू. योगीस्वरूपस्वामी** का **भागवती दीक्षा** दिन और तारीख के अनुसार **सेवक पू. शिवम्** का **जन्मदिन** था। सो, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के प्रागट्य दिन की बेला पर, **प.पू. गुरुजी** के रूप में हमें प्राप्त हुए साक्षात् गुणातीत स्वरूप को सेवक शिवम् ने हार अर्पण किया। फिर केक अर्पण करके सभी संतों, सेवकों एवं उपस्थित हरिभक्तों ने आरती की और इस अनुपम दर्शन की स्मृतियाँ लेकर सभी अपने घर लौट गये।

10 नवंबर, धनत्रयोदशी

जगत की दृष्टि से धनतेरस कार्तिक माह (पूर्णिमान्त) की कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन समुद्र-मंथन के समय भगवान धन्वन्तरि अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे, इसलिए इस तिथि को धनतेरस या धनत्रयोदशी के नाम से जाना जाता है और इस अवसर पर धातु के बर्तन खरीदने की परंपरा है। साथ ही यह भी मान्यता है कि इस दिन धन (वस्तु) खरीदने से उसमें तेरह गुणा वृद्धि होती है। सो, धनतेरस के दिन चाँदी खरीदने की भी प्रथा है; जिसका यह कारण माना जाता है कि चाँदी चन्द्रमा का प्रतीक है, जो शीतलता प्रदान करती है, जिससे मन में संतोषरूपी धन का वास होता है। जिसके पास संतोष होगा, वह स्वस्थ, सुखी और सबसे धनवान है। लोग इस दिन ही दीपावली की रात लक्ष्मी, गणेश की पूजा हेतु मूर्तियाँ भी खरीदते हैं।

दिल्ली मंदिर में भी वर्षों से इस दिन विशिष्ट महापूजा की जाती है। सो, इस बार भी कल्पवृक्ष हॉल में **प.पू. गुरुजी** की निश्रा में **पू. मैत्रीशीलस्वामीजी** ने महापूजा संपन्न की। जिसमें गुरुहरि काकाजी महाराज और प.पू. गुरुजी के हस्ताक्षर की प्रतिलिपि युक्त चाँदी के सिक्कों का पूजन किया। कई भक्तों ने प्रसादी के ये सिक्के बरकत के रूप में खरीदे। **प.पू. गुरुजी** ने धनतेरस का सही अर्थ बताते हुए मर्मयुक्त निम्न आशीर्वाद दिया—

*...हर साल धनतेरस पर हम धनपूजन करते आये हैं। जब भी इस निमित्त कुछ बात करने के लिये कहा जाता है, तो मैं एक ही बात करता हूँ कि ये तो पूजन करना ही करना है, लेकिन हमारा **सच्चा धन** तो भगवान स्वामिनारायण और उनकी गुणातीत परंपरा है। उनका जो **संबंध** हुआ है, वो हमारे जीवन में **सच्चा धन** है और इस संबंध को हमें संजोये रखना है। वो किस तरह-तो इस*

*संबंध की दिव्यता को पकड़े रखना है। **भगवान व उनके संतों के प्रति मनुष्यभाव-मायिकभाव न रहे।** संभवतः मनुष्यभाव तो नहीं रहता, लेकिन मायिकभाव भी नहीं रखना। **ख़ास करके यह मायिकभाव न हो कि भगवान ने ठीक नहीं किया।** सिर्फ अपने लिये ही नहीं, बल्कि सबके लिये भी यह नहीं सोचना कि भगवान ने ये बराबर नहीं किया, इसके बजाय अगर ऐसा करते वगैरह, जिससे कि उसको आनंद मिलता। तो, ये जो हमारी मायिक सोच है, उसके लिये आज के दिन हम गद्‌गद कंठ से रात को बैठ कर प्रार्थना करें कि अब हमें ये परेशान न करे, न हम ऐसी सोच में चले जायें। जब जाना ही नहीं है, तो डूबने की तो बात ही नहीं है। तो ख़ास यही बात करनी है कि हमें जिनका संबंध मिला हुआ है, **ये मूर्तियाँ मानवस्वरूप में धरती पर आई हुई हैं।** इसलिये हम भजन-धुन करेंगे, तो हमारी प्रार्थना अर्चिमार्ग से इन्हें तुरंत पहुंचती है और पहुंच जायेगी। तो **हम पुकार करते रहें** यही प्रार्थना। आज सभी रात को अवश्य धुन करें कि गुणातीत संतों, प्रत्यक्ष स्वरूपों और संतों के प्रति ये जो मायिकभाव है, वो हमारे अंतर हृदय से हट जाये, उसके लिए हम गद्‌गद कंठ से प्रार्थना करें। तो, सभी आज रात को ज़रूर करें और रोज़ करें। कम से कम अगली धनतेरस तक break न हो। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।*

प.पू. गुरुजी से आशीष लेने के बाद, जिन मुक्तों ने अपनी धन-सामग्री महापूजा में रखवाई थी अथवा चाँदी के सिक्के खरीदे थे, वे **पू. कौशिकभाई जानी** से प्राप्त किये और फिर प्रसाद लेकर अपने गंतव्य स्थान पर लौट गये।

12 नवंबर, दीपावली

भारतीय संस्कृति में एक समय ऐसा था, जब साल के 365 दिन यानि रोज़ कोई न कोई उत्सव होता था! उसका यही हेतु था कि मनुष्य अपने जीवन को उत्सव के रूप में व्यतीत करे।

ऐतिहासिक रूप से दीपावली के पहले दिन **काली चौदस**, जिसे हमारे गुणातीत स्वरूप **अक्षरचौदस** कहते हैं—वह दिन है, जब श्री कृष्ण ने नरकासुर का वध किया था। उसका मूल नाम नरकासुर नहीं था, पर वो लोगों के जीवन को यातना दे देकर नर्क बना देता था और इसीलिये लोग उसे नरकासुर कहने लगे। जो दूसरों को दुःख, तकलीफ, नरक दे वो नरकासुर है। जब श्री कृष्ण ने इस यातना देने की प्रक्रिया का अंत कर दिया, तो लोगों ने हर घर में दिये जला कर उत्सव मनाया... सामान्यतः व्यक्ति के जीवन में एक तरह की जड़ता आ जाती थी। सो, दीया जलाने की प्रक्रिया अंतर्मन को जाग्रत करने का संकेत है। इसीलिये उत्सवों की श्रृंखला में **दीपावली प्रकाश का त्योहार है।** जब शहर, कस्बे और गाँव हज़ारों दियों की रोशनी से

जगमग होते हैं, पर ये उत्सव केवल बाह्य दीपक जलाने के लिये नहीं, बल्कि आंतरिक प्रकाश प्रज्वलित करने का प्रतीक है। परमात्मा से प्राप्त नेत्रों-दृष्टि द्वारा व्यक्ति प्रकाश देख पाता है, पर सही अर्थ में तो प्रकाश का एहसास हमारे जीवन में एक नयी शुरुआत का सूचक होता है, जो हमें ध्येय की स्पष्टता देता है। जड़ता को मिटाना ही दिवाली है हम सभी अत्यंत भाग्यशाली हैं कि हमारी जन्मों की जड़ता व आत्मा की प्यास मिटाने के लिये गुणातीत स्वरूपों ने स्वयं अपनी गोद में बिठा लिया और वे प्रति पल हमारे संग-संग होने का एहसास दिलाते हैं। साथ ही साथ, हमारे व्यावहारिक, आध्यात्मिक एवं आत्मिक उत्थान के लिये तथा स्वयं से हमारा संबंध दृढ़ कराने के लिये वे ही नित्य नवीन संयोग योजित करते हैं। इसीलिये प्रति वर्ष दिवाली की सायं मंदिर में लक्ष्मीपूजन की महापूजा होती है, जिसका लाभ स्थानिक एवं बाहर से आये मुक्त लेते हैं। इस साल भी सायं 6:30 बजे के करीब कल्पवृक्ष हॉल में **प.पू. गुरुजी** की निश्रा में **पू. मैत्रीशीलस्वामीजी** ने महापूजा की। जिसमें मुक्तों ने नये साल के बही-खाते, डायरी प्रसादी की करने के लिये रखवाईं। प.पू. गुरुजी की ओर से **पू. सुहृदस्वामीजी** ने पूजन किया और सभी के बही-खातों और डायरी के पहले पन्ने पर **गुरुहरि काकाजी महाराज** के स्वहस्त से लिखित प्रसादी के निम्न आशीर्वाद का स्टीकर लगाया—

जय स्वामिनारायण... जय गुरुदेव की...

आपका धंधा प्रभु अत्यंत अच्छा चलावे, वो ही शुभाशीष है।

आपका दादुभाईजी-गुरुजी का जय स्वामिनारायण!

महापूजा के बाद दीवाली निमित्त, **'सजा दो घर को गुलशन-सा अवध में राम आये हैं...'** भजन **पू. ऋषभ नरूला** एवं **पू. पंकज रियाज़जी** ने प्रस्तुत किया। दिवाली के दिन सभी अपने घरों में श्री गणेशजी-लक्ष्मीजी की पूजा-अर्चना करते हैं और... **दिल्ली मंदिर से जुड़े हरिभक्त तो मंदिर को ही अपना बड़ा घर मान कर, हमेशा यहीं पर दिवाली का त्योहार मनाते हैं।** सो, **प.पू. गुरुजी** के रूप में मिले **प्रगट-प्रत्यक्ष प्रभु** का सभी की ओर से **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** ने पूजन किया। बहनों-भाभियों की ओर से **पू. डॉली दीदी** एवं परिवार ने **प.पू. दीदी** का पूजन किया। तत्पश्चात् कुछ मुक्तों के इस दिन शुभ प्रसंग होने के कारण, प.पू. गुरुजी ने उन्हें स्मृति भेंट दी और विसर्जन के बाद महाप्रसाद लेकर सबने प्रस्थान किया।

13 नवंबर, अन्नकूटोत्सव

मान्यता है कि ब्रजवासियों की रक्षा के लिए **भगवान श्रीकृष्ण** ने अपनी दिव्य शक्ति से विशाल गोवर्धन पर्वत को छोटी अंगुली में उठाकर, हज़ारों जीव-जतुंओं और मनुष्यों के जीवन

को देवराज इंद्र के कोप से बचा कर, उनके घमंड को चूर-चूर करके गोवर्धन पर्वत की पूजा की थी। उसी दिन से गोवर्धन पूजा की शुरुआत हुई। सो, दिवाली के अगले दिन भगवान कृष्ण, गोवर्धन पर्वत तथा गायों की पूजा का विधान है और 56 या 108 तरह के पकवान बनाकर प्रभु को भोग लगाया जाता है। **अन्न का समूह यानि अन्नकूट**! इसलिये इसे **'अन्नकूट पर्व'** भी कहते हैं।

श्रद्धालु तरह-तरह की मिठाइयों और पकवानों से भोग लगाते हैं। कई सारी सब्ज़ियों को एक साथ मिलाकर मिलीजुली सब्जी, कढ़ी, चावल अथवा पूड़ी आदि का प्रसाद भक्तों में बांटा जाता है। साथ ही अन्नकूट को प्रकृति माँ को धन्यवाद देने के अनुष्ठान के रूप में भी मनाया जाता है। मान्यताओं के अनुसार इस त्योहार को मनाने से व्यक्ति को धन-धान्य का आशीर्वाद मिलता है, ताकि परिवार को कभी भी भोजन से वंचित न होना पड़े। **देवी अन्नपूर्णा** की कृपा बनी रहे और सारे साल प्रभु का प्रसाद भोजन के रूप में लेते रहें। यह त्योहार हरियाणा तथा गुजरात में नये साल या विक्रम संवत के रूप में और कई जगह **'विश्वकर्मा पूजा'** के रूप में मनाया जाता है। जिसमें दैनिक जीवन के औजारों की पूजा की जाती है।

श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर—अशोकविहार में भी करीब 5 दशक से यह पर्व मनाया जाता है। मुमुक्षुजन तो सालभर इसकी प्रतीक्षा करते हैं। दीवाली के दिन दोपहर को बहनें-भाभियाँ अन्नकूट की सब्जियाँ काटने के लिये विशेष रूप से आती हैं। रात को 12 बजे के बाद, पूरी रात जग कर **पू. सुहृदस्वामीजी, पू. योगीस्वामीजी** एवं कई मुक्तों के साथ मिलकर कढ़ी, चावल और मिश्रित सब्जी बनाते हैं। मंदिर से जुड़े आत्मीय हरिभक्त सुबह 7:00 बजे से भोजन सामग्री सेवा रूप देने के लिये आने लगते हैं। सबके सहयोग से तकरीबन 800 भोजन सामग्रियों को कलात्मक रूप से कल्पवृक्ष हॉल में श्री ठाकुरजी के समक्ष लगाया जाता है।

इस वर्ष मंदिर के प्रांगण में बनाये सभा खंड की पृष्ठभूमि पर ब्रह्मांड का चित्रण किया था। श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज सहित गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियाँ अंकित की थी और प्रार्थना रूप लिखा था—

इस ब्रह्मांड में हम ही सबसे अधिक भाग्यशाली हैं,
क्योंकि हमें गुणातीत संत का संबंध मिला है!

करीब सुबह 9:30 बजे प.पू. गुरुजी की निश्रा में, **पू. राकेशभाई शाह, पू. अनूप टांगरीजी (जगरांव), पू. हृदय वर्मा, पू. ऋषभ नरूला** एवं **पू. पुण्यम्** ने स्वामिनारायण धुन व भजनों से

अन्नकूट सभा आरंभ की। नये वर्ष निमित्त ईटेड़ा के **पू. भीम यादव**, मुंबई के **पू. मिलनभाई माणेक** एवं **पू. ऋषभ नरूला** ने सभी की ओर से आशीष याचना की। अंत में **पू. राकेशभाई शाह** ने दिवाली कार्ड के माध्यम से **प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई** द्वारा भेजा संदेश पढ़ा, जिसे समझाते हुए **प.पू. गुरुजी** ने निम्न आशीर्वाद दिया—

*...भेदभाव क्या? ये हमारे दिल्ली का, ये तो गुजरात का है, ये तो मुंबई का है, ये तो शिकागो का है। ऐसा जो हमें फ़रक नज़र आता है, उसके बजाय कुछ भी हो— **'हम सब एक हैं।'** ये सब हमारे हैं, हम इनके हैं। ये भावना दृढ़ हो, वो हम एक!*

*जब हमें कोई न पसंद आये, तो ऐसी बात बन जाती है। **तब हमारी नज़र अपने दोष देखने के बजाय, इसके कारण ऐसा हुआ, इसने ये करा इसलिये ऐसा हुआ, ये अड़ कर बैठ गया इसलिये बात नहीं बनी—ऐसी सोच आ जाती है। उसके बजाय कुछ भी समझ न आये, तो भजन और प्रार्थना का उपाय लें।***

...यह बहुत कठिन चीज़ है कि बेमतलब कोई हमें एकदम डांटे, तो ऐसा होगा ही कि मेरा कोई कसूर नहीं था, लगता है इसका दिमाग़ खराब हो गया है। लेकिन, जिस व्यक्ति ने हमारा कसूर बताया हो, तो हम यदि वो ढूंढ नहीं पा रहे हों, तो उसके लिए प्रार्थना करें कि महाराज इसने जो मेरे लिये कहा है; वो टल जाये ऐसा आज कर दो, ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए...

*अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना यही है कि हम सर्वदेशीय हों और हरेक को अपना ही गिनें, अलग गिनें नहीं। इनके साथ **कोई भेदभाव न रखें, वो अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना है। निर्दोषबुद्धि के राजमार्ग पर चलेंगे, तो ये सर्वदेशीयता और उपासना सिद्ध हो जायेगी।** सबसे बड़ा काम अपनी उपासना का है। अपनी उपासना इतनी दिव्य और भव्य है कि उसे पकड़े रखेंगे, तो महाराज हमारे लिये सब काम सुलभ कर देंगे।*

*...**धुन कर-करके थक गये हैं; कुछ नहीं होता, ऐसा जो भाव अपने मन में आ जाता है, वो नकारात्मक भाव छोड़ कर भजन का ही बल लो।** यूं सकारात्मक सोचो कि मेरा तंत्र-मार्ग जब ठीक हो जायेगा, तो महाराज मेरा तंत्र अधिक ठीक कर देंगे, मेरा व्यवहार वे अधिक चलायेंगे। ये सकारात्मक सोच पकड़े रखकर जीवन की खुशी को भोगें। ये अनुभव करने की बात है, बोलने की बात नहीं है। भीतर में एहसास हो जायेगा कि **सारा समाज दिव्य है, सारा समाज निर्दोष है**... हमारा लक्ष्य क्या है कि हम अक्षररूप बन जायेंगे। समाज में हरेक को अक्षरधामरूप देखते हो जायेंगे, तो हम खुद अक्षररूप हो गये हैं।*

प्रभु और प्रभु के स्वरूप यानि ब्रह्मस्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना करें कि दिव्यता की ऐसी दृष्टि यानि सभी को निर्दोष समझने की दृष्टि मिले कि इनमें कोई दोष नहीं है। अगर हमें कुछ नज़र भी आता है, तो वो प्रभु उसे वर्ता रहे हैं। इसलिये लड़ाई भी करनी है, तो प्रभु से करो।

मैंने पहले भी शायद बात करी है—नई उमंग कैसी? उमंग जो है, वो तो होती ही रहती है। पर, ***बापा ने बताया था कि आज खाना खाया, तो कल ऐसा होता है कि कल तो खाया था और यही आज खाना है।*** *नहीं, नई उमंग से खाना खा लेते हैं; नई भूख लगती है।* ***इसी तरह नई उमंग से, नई श्रद्धा खड़ी करके हम समाज के अंदर हिल-मिल जायें।***

प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद से सभा का समापन हुआ और फिर प.पू. गुरुजी के साथ संतों, युवकों एवं हरिभक्त भाइयों ने अन्नकूट आरती के लिये कल्पवृक्ष हॉल की ओर प्रस्थान किया। श्री ठाकुरजी को अन्नकूट का भोग लगाने के लिये जैसे ही पर्दे खोले गये, तो यहाँ भी **ब्रह्मांड** की सजावट का अद्‌भुत दर्शन हुआ और पृष्ठभूमि वाली ही प्रार्थना लिखी हुई थी। मध्य में **श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज** की मूर्ति के साथ ही **अनादि महामुक्त गोपालानंदस्वामीजी** की प्रसादी के **लड्डू गोपालजी** और उनके साथ मुंबई के **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** तथा दिल्ली के **पू. संदीप मरोड़ियाजी** के घर में स्थापित **लड्डू गोपालजी** भी दर्शन दे रहे थे। यूँ तीन लड्डू गोपालजी विराजमान थे और मुख्य बात यह थी कि **प.पू. गुरुजी** की **संगमरमर** की **मूर्तिप्रतिष्ठा** के बाद यह **प्रथम बड़ा अन्नकूट** था। धुन के बाद **पू. राकेशभाई** के साथ **सेवक पू. विश्वास, पू. चिराग मोन्डे, पू. पंकज रियाज़जी, पू. हृदय वर्मा, पू. ऋषभ नरूला, पू. नक्षत्र, पू. पुण्यम् और पू. उज्ज्वल** ने चार थाल गाकर, भावना से भोग लगा कर सबको भावविभोर कर दिया। तत्पश्चात् जैसे कि प्रति वर्ष बारी-बारी से हरिभक्तों को आरती करने का सुअवसर दिया जाता है। सो, उनके अनुसार मुक्तों ने अन्नकूट की आरती संपन्न की। इसके उपरांत बहनों व भाभियों ने अन्नकूट का दर्शन किया और फिर श्री ठाकुरजी के भोग से बना कढ़ी, चावल और मिश्रित सब्जी का महाप्रसाद लेकर सभी तृप्त हुए। दोपहर करीब 3:30 बजे तक हरिभक्त अन्नकूट दर्शन के लिये आते रहे और महाप्रसाद लेकर गये। फिर करीब 5:30 बजे के बाद अन्नकूट में लगाये गये विभिन्न ताज़े व्यंजनों का प्रसाद वहाँ उपस्थित हरिभक्तों ने लिया। इसके अतिरिक्त जो हरिभक्त नहीं आ पाये थे, उन्हें भेजने के लिये सूखे प्रसाद के डिब्बे बनाने की सेवा शुरू हुई और उसी दौरान अन्नकूट के बर्तन मांजने की सेवा भी होती रही। सभी सेवायें पूरी करवा कर अन्नकूट उत्सव का समापन हुआ और मुक्तगण अपने घर लौटे।

19 नवंबर – ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के उत्तराधिकारी
प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी का दिल्ली मंदिर में स्वागत...

20 नवंबर – प.पू. गुरुजी एवं प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी के सान्निध्य में नूतन वर्ष स्वागत सभा...

20 नवंबर, नूतन वर्ष स्वागत सभा
प.पू. गुरुजी एवं प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी के सान्निध्य में...

प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी को याद करते हुए कुछ समय पहले सहज ही **प.पू. गुरुजी** ने सेवकों से कहा—

प्रेमस्वामीजी अब जब भी दिल्ली आयेंगे, तो स्वामीजी के उत्तराधिकारी के रूप में उनका बढ़िया स्वागत करेंगे।

प.पू. गुरुजी की ऐसी भावना हम सभी के लिये दीपस्तंभ के समान है कि गुणातीत स्वरूपों—गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी और ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी ने किस प्रकार संबंध वालों का, बड़ों, सरीखों और छोटे मुक्तों का माहात्म्य सिंचन सबके हृदय में किया होगा! हम सभी इस मार्ग पर अग्रसर हों, वो प.पू. गुरुजी स्वयं अपने वर्तन से सिखाते हैं और... जैसे कि गुणातीत स्वरूपों के स्वमुख से अकसर सुना है कि सब कुछ ब्रह्मनियंत्रित है, तो प.पू. गुरुजी की भावना जल्दी साकार हो गई। **18 नवंबर 2023** की रात को करीब 10:30 बजे हरिधाम से **पू. ज्ञानस्वरूपस्वामीजी** का फोन आया—

प्रेमस्वामीजी कल दिल्ली आकर प.पू. गुरुजी से मिलने आना चाहते हैं और फिर आगे पंजाब-चण्डीगढ़ विचरण के लिए प्रस्थान करेंगे।

जैसे ही **प.पू. गुरुजी** को यह बात पता चली, तो उनके आगमन की तैयारी करने के लिए सेवकों से कहा—

मंदिर का पूरा परिसर दीपकों से सज़ा दो और मेरी गाड़ी भेजना... हरिप्रसादस्वामीजी के वारिसदार प्रेमस्वामीजी आ रहे हैं।

प.पू. गुरुजी की बातों से एक भावनात्मक प्रेम झलक रहा था। अगले दिन **19 नवंबर** की रात को **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी** का स्वागत करने हेतु रात को 11:45 बजे **प.पू. गुरुजी 'जेतलपुर'** में विराजमान हुए। मंदिर आंगन में दीये और कृत्रिम फूलों से सुंदर रंगोली बनाई थी और पूरा मंदिर रोशनी से जगमगा रहा था। रास्ते से गुज़रते लोग रुक-रुक कर सारा दृश्य देख रहे थे। तकरीबन 12:00 बजे प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी मंदिर पहुँचे, तो तालियों की गड़गड़ाहट और उनके लिये बनाये भजन 'वाग्या रे ढोल...' बजा कर संतों-मुक्तों ने सत्कार किया। थोड़ी देर वे 'चिदाकाश हॉल' में प.पू. गुरुजी के साथ बैठे और फिर आराम में गये।

अगले दिन **20 Nov** की **सायं 7:00 बजे प.पू. गुरुजी** एवं **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी** के सान्निध्य में **नववर्ष स्वागत सभा** का आयोजन किया था। सो, स्थानिक हरिभक्त यह लाभ लेने

के लिये आये। सभा की शुरुआत करते हुए **पू. राकेशभाई शाह, सेवक पू. विश्वास, पू. ऋषभ नरुला** एवं **पू. पुण्यम्** ने गुजराती में ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी का भजन प्रस्तुत करके प्रार्थना की।

तत्पश्चात् प्रासंगिक उद्‌बोधन करते हुए **पू. राकेशभाई शाह** ने कहा कि हरिधाम जब जाते हैं, तो प.पू. गुरुजी एवं प.पू. प्रेमस्वामीजी के एक घनिष्ठ संबंध का दर्शन होता है और... साथ ही **गुरुहरि काकाजी महाराज** द्वारा **प.पू. गुरुजी, प.पू. कोठारीस्वामीजी, प.पू. शास्त्रीजीस्वामीजी, प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी** एवं **प.पू. दासस्वामीजी** को दिये गये निम्न आशीर्वाद की स्मृति करी, जो पाँचों संतों की मूर्ति के साथ कल्पवृक्ष हॉल में एक frame में लगाया हुआ है–

पंजा एक–ऐसा तुम पाँच संतों (स्नेहलमंडल) को दृढ़ कराना है। इस मुद्दे के काम में मेरा साथ देना। हमें अखंड अक्षरधाम में रहना है...

इसके उपरांत **पू. अक्षरस्वरूपस्वामीजी** ने प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी का माहात्म्यगान करते हुए उनके दासत्वभाव का दर्शन करवाया तथा **पू. सरयूविहारीस्वामीजी** ने 19 नवंबर की देर रात्रि को प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी से प्राप्त हुई दिव्य सूझ कि प.पू. गुरुजी की तरफ हमारी कैसी दृष्टि होनी चाहिये, सेवकों को उन्हें कैसे निहारना चाहिये और पल-पल उनकी स्मृति में रहना चाहिये, उसका वर्णन करते हुए उस मार्ग पर चलने के लिये प्रार्थना की।

नूतन वर्ष के आगमन की प्रथम सभा के उपलक्ष्य में सभी की ओर से **पू. सौरभ शाह** ने **प.पू. गुरुजी** को हार अर्पण किया। अगले दिन पू. सौरभ शाह का **जन्मदिन** होने के कारण प. पू. गुरुजी ने प्रसादी का यह हार **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी** के वरद् हस्तों से उसे पहनवाया। दिल्ली के मुक्तों का भाव व्यक्त करते हुए **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी** को **पू. आशीष शाह** ने हार अर्पण किया। तत्पश्चात् **पू. राकेशभाई शाह** एवं **सेवक पू. विश्वास** ने वर्षों पहले आत्मीय महोत्सव निमित्त ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के लिये बनाया गया हिन्दी भजन गाकर भक्ति अदा की।

और... **हरिधाम मंदिर के अधिष्ठाता प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी** ने गुणातीत स्वरूपों के प्रसंगों की श्रृंखला द्वारा साधकों को अद्‌भुत मार्गदर्शन देते हुए निम्न आशीर्वाद दिया, जिसका एक-एक शब्द खूब मननीय है–

...हम सब बहुत बड़े भाग्यशाली हैं। योगीजी महाराज हमेशा कहते थे कि मेरे जैसा भाग्यशाली इस धरती पर कोई नहीं है। *बार-बार ये बात कहते और समझाते थे कि हमें जो संबंध हुआ है, यदि उस संबंध का ख्याल आ जाये; उस पर हमारी नज़र पड़ जाये, तो जीवन धन्य और कृतार्थ हो जाये।*

- ***भगवान स्वामिनारायण*** *के पास 18 साल का लड़का-एक पार्षद* ***'वीरा भक्त'*** *रहता था, प्रभु उसे पूछ कर ही सब करते थे। किसी को धाम में ले जाना हो, तो भी उससे पूछते थे। अगर वो कहता कि महाराज रहने दो अभी छोटा है, तो महाराज उसे लेने नहीं जाते थे।* ***मुक्तानंदस्वामीजी*** *बहुत चिकित्सक संत थे। यह सब देख कर वे सोच में पड़ गये कि प्रभु सब कुछ इससे पूछ कर क्यों करते हैं? एक बार मौका मिलने पर प्रभु से ही उन्होंने पूछ लिया—प्रभु, आपकी ये क्या लीला है, हमारी समझ में नहीं आती है। ये 18 साल का छोटा-सा पार्षद है, आप इससे ही पूछ कर सब करते हैं। महाराज यह सुन कर हँस पड़े। तब मुक्तानंदस्वामीजी ने यह भी पूछा कि महाराज! इस लड़के के रूप में आप किसे साथ में लाये हैं? तब महाराज ने उत्तर दिया कि एक बार हम वन विचरण में थे और हमारे पांव नंगे थे, मोजड़ी नहीं पहनी थी। तब कोई छोटा-सा पौधा हमारे पाँव को स्पर्श कर गया और हमारी दृष्टि उस पर पड़ गई होगी, तो वो ये वीरा भक्त है। सोचें कि हम कितने* ***भाग्यशाली*** *हैं?* ***हम मानते हैं क्या कि गुरुजी द्वारा भगवान स्वामिनारायण हमें मिले हैं।*** *यदि मानेंगे, तो ये बात समझ में आयेगी वर्ना नहीं आयेगी। हम* ***भाग्यशाली*** *इसलिये भी हैं कि ऐसे प्रभु के योग में हम आ गये हैं।*
- ***गुणातीतानंदस्वामीजी*** *भी एक बार सर्दियों अपने छोटे से घोड़े पर सवार होकर विचरण में जा रहे थे। 200 साल पहले की बात है; उस समय रास्ता भी कैसा होगा, आप सोच सकते हो। वे एक खेत के बीच में से जा रहे थे और वहाँ गेहूँ की फसल खड़ी थी। अचानक पवन का एक झोंका आया, तो गेहूँ की बाली उनके पैर से स्पर्श हुई और उनकी दृष्टि उस पर पड़ गई। इस प्रसंग की बात ये है कि अक्षरपुरुषोत्तम उपासना के लिये शास्त्रीजी महाराज जब वड़ताल से निकले, तो उन्होंने बहुत विचरण-बहुत परिश्रम किया और बहुत अपमान भी सहन किया। तब मुश्किल से 25-30 परिवार उनके साथ थे। तो, आणंद में अकसर* ***महंतस्वामीजी के*** *पूर्वाश्रम के घर ठहरते थे। फिर वहाँ अन्यों को बुला कर सत्संग इत्यादि करते थे। उस समय न तो फोन और न ही मोबाइल था। आज के जैसी कोई व्यवस्था नहीं थी। तो, शास्त्रीजी महाराज महंतस्वामीजी की पूर्वाश्रम की माँ (पू. चंचलबा) को स्वप्न में दर्शन देकर कहते थे कि हम 2 संत और 15-20 भक्त आने वाले हैं, तो सबके लिये खाना बनाना। महंतस्वामीजी के पिताजी को जब उनकी माताजी यह बताती थीं, तब वे कहते कि शास्त्रीजी महाराज तुम्हें ही दर्शन देकर सब कह जाते हैं और बता जाते हैं। वे कहतीं कि मुझे दर्शन देकर कहा है, तो आप इंतजाम कर दो। दरअसल, वे ठहरने वाले होते थे,*

तो उस समय तो पानी भर कर रखना होता था। हर घर में नल नहीं होता था और आणंद तो छोटा-सा शहर था। शास्त्रीजी महाराज सपने में कहते भी थे कि इतने लोग आने वाले हैं, रात रुकेंगे तो सब इंतजाम कर लेना, पानी भर कर रखवा लेना। सब कुछ बताते थे। वो ***माताजी को शास्त्रीजी महाराज ने 32 बार दर्शन दिये थे।*** *फिर एक दिन मणिकाका (महंतस्वामीजी के पिताश्री) ने शास्त्रीजी महाराज से पूछा—स्वामी, ये कौन-सा मुक्त लाये हैं? जिन्हें बार-बार दर्शन देकर सारी बातें बताते हो। तब शास्त्रीजी महाराज हँस पड़े और फिर गुणातीतानंदस्वामी की दृष्टि में आये गेहूँ के पौधे का प्रसंग बताया कि वो उसमें से गेहूँ का एक दाना तुम्हारी घरवाली है। हम समझें हम कितने* ***भाग्यशाली*** *हैं? बहुत बड़ी बात है, सामान्य बात नहीं है।*

❋ ***शास्त्रीजी महाराज*** *एक बार वर्षा ऋतु में बड़ौदा जिले में विचरण कर रहे थे। वहाँ के 'पौर' टाऊन के पास एक नदी गुज़रती है। उस समय गाँव में टॉयलेट की व्यवस्था तो थी नहीं, तो बाहर जाना पड़ता था। तो, शास्त्रीजी महाराज टॉयलेट जाने के बाद नदी में स्नान करने गये, तब उनके साथ मणिकाका सलाळवाला भी थे। जब ऐसे बड़े पुरुष के साथ स्नान करने का मौका मिलता है, तो बहुत आनंद आता है। वे अंजुली भर-भरके शास्त्रीजी महाराज को स्नान करा रहे थे और शास्त्रीजी महाराज हँस रहे थे। मणिकाका को विचार आया कि स्वामी क्यों हँस रहे हैं? दो बार शास्त्रीजी महाराज से पूछा, पर वे कुछ बोले नहीं। फिर जब तीसरी बार पूछा तो शास्त्रीजी महाराज ने कहा कि मणिभाई तुम्हारे सामने मैं देखता हूँ, तो मेरे संबंध से तुम्हारे पुण्य की मैं गिनती नहीं कर सकता। तो सोचिये,* ***हम कितने भाग्यशाली हैं कि वो ही पुरुष हमें मिले हैं।*** *लेकिन इस बात को पकड़नी है। जब ऐसी निष्ठा होगी कि हमें शेष कुछ नहीं करना है, तभी तो हमारा काम (विकास) शुरु होगा।* ***बाकी वे प्यार करते रहेंगे और हम आते रहेंगे, ऐसा नहीं करना है।*** *ये बात आज नहीं तो कल या कभी भी समझनी तो पड़ेगी ही।* ***जब ये बात समझ कर जीवन में उतारेंगे, ऐसा संबंध बनायेंगे तभी संबंध की शुरुआत होगी। बाकी वे तो हमें प्यार करते ही रहेंगे कि आओ बैठो, खाओ-पीओ आनंद करो।*** *लेकिन, जब तक ये बात समझ में नहीं आयेगी, तब तक संबंध नहीं होगा और जब तक संबंध नहीं होगा, तब तक आत्यांतिक कल्याण नहीं होगा। चाहे गृहस्थी हो या त्यागी, सबके लिये एक ही बात है। चलने का रास्ता एक ही है।* ***हमें जो पुरुष मिले हैं, इनके प्रति हमारे हृदय में भगवद्भाव होना चाहिये।***

❇ ***योगीजी महाराज*** *जब सोखड़ा आते थे, तो अपने पुराने मंदिर में तीन नारियल के पेड़ देख कर बापा कहते थे कि ये पेड़ देवियाँ हैं। सोचिये, ऐसा कौन बोल सकता है? ये सब आर्षदृष्टा पुरुष हैं। तो, हम बहुत ही* ***भाग्यशाली*** *हैं ये बात ही पकड़नी है। जब तक ये बात पकड़ में नहीं आयेगी, तब तक आना-जाना लगा रहेगा...*

❇ ***काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी*** *सबने मिलकर 1981 में* ***हरिधाम*** *में* ***मूर्तिप्रतिष्ठा*** *की। तब स्वामीजी ने* ***'सरस एक सहजानंद'*** *ग्रंथ प्रकाशित कराया। उसमें एक अलग angle से भगवान स्वामिनारायण का जीवन चरित्र दर्शाया है।* ***बड़े पुरुष की एक रीति-नीति होती है कि वे सेवकों को फ्री नहीं रहने देते। कुछ न कुछ प्रोग्राम जारी रखते हैं, ताकि हमारा मन प्रभु से ही जुड़ा रहे।*** *तो, उत्सव पूरा हुए थोड़े दिन हुए थे कि स्वामीजी ने कहा कि हमें 'सरस एक सहजानंद' पुस्तक की पारायण करनी है। तब छोटा-सा परिवार था, तो ज्ञानयज्ञ भवन में बैठे है। उसमें दायीं तरफ एक पाट पर स्वामीजी का आसन बनाया था। तब ज्यादा कुछ हमारे पास था ही नहीं, जो था उस पर बैठाते थे। दो सोफा थे—एक पर शास्त्रीस्वामी और एक पर कोठारीस्वामी बैठे थे। हम लोग सामने नीचे बैठे थे। उस समय में उत्सव की थकान तो थी ही, तो स्वामीजी की बातें सुनने में नींद आने की संभावना बहुत थी। सो, मैंने सोचा कि स्वामीजी बोलेंगे तो वो कुछ मुद्दे लिखते रहेंगे, तो नींद नहीं आयेगी। कोठारीस्वामीजी के पास भी एक डायरी थी, तो वो भी लिख रहे थे। हम दोनों आमने-सामने बैठे थे। वो सोफा पर थे और मैं नीचे बैठा था। स्वामीजी ने कहा कि आज हम इस पुस्तक में* ***'संबंध वही सहजानंद'*** *चैप्टर का पारायण करेंगे। वो समझाते-समझाते स्वामीजी ने एक वाक्य कहा कि* ***यदि हमें भगवान स्वामिनारायण की यथार्थ निष्ठा है, तो स्वामिनारायण नाम किसी भी तरह से कोई भी बोले, चाहे गालियाँ देकर या प्यार से बोले या संबंध से बोले, तो यदि इनका गुलाम बनने का विचार आये, तब मानना कि हमें यथार्थ निश्चय है।*** *यह सुन कर हमारा तो pen रुक गया। उसी समय कोठारीस्वामी का भी pen रुक गया और हम दोनों की एक-दूसरे से आँखें मिली। स्वामी की बात सुन कर ऐसा हुआ कि ये कैसे हो सकता है कि एक बार स्वामिनारायण बोले और उसका गुलाम बनना?* ***गुलाम का मतलब क्या होता है?***

एक गुलाम से ***मालिक*** *पूछे—****तुम्हारा नाम क्या है?***

गुलाम *कहेगा—****आप जो नाम कह कर बुलाओ।***

मालिक — ***क्या खाओगे?***

*गुलाम – **जो दोगे वो खाऊंगा।***

*मालिक – **कहाँ सोओगे?***

*गुलाम – **आप जहाँ सुलाओगे।***

*मालिक – **कहाँ रहोगे?***

*गुलाम – **आप जहाँ रखोगे वहाँ।***

*मतलब **मनरहित** होने की बात है। **जब अमन होता है, तभी प्रभु प्रेरणा से ये विचार आते हैं।** तब हमारा तो दिमाग ही बंद हो गया कि क्या करें? कैसे करें? बात पूरी होने के बाद स्वामीजी 'अनिर्देश' पधारे और हम लोग 'योगी आश्रम' गये। साढ़े बारह बजे के आसपास message आया कि स्वामीजी ने कोठारीस्वामी और प्रेमस्वरूपस्वामीजी को बुलाया है। हमारे मन में गुलाम बनने का विचार तो चल ही रहा था। स्वामीजी के पास पहुँचे, तो उन्होंने पूछा कि क्या प्रोग्राम है? पहले तो ऐसा था कि स्वामीजी ने मुझसे कहा था कि कुछ काम हो, तो तू कोठारीस्वामी के साथ रहना और वो साथ में करना। बड़ौदा जाना होता, तो मंदिर के काम के लिये हम दोनों जाते थे। तब कोई व्यवस्था तो थी नहीं। स्वामीजी के लिये एम्बेसडर कार थी और संतों को बड़ौदा जाने के लिये ब्लू कलर का थ्री व्हीलर था, जिसमें बैठ कर हम जाते थे। हमने कहा कि कोई प्रोग्राम तो नहीं है। आपकी क्या आज्ञा है, वो बतायें? तो, स्वामीजी ने कहा कि बड़ौदा में एक पंजाबी फेमिली-हार्डवेयर के बड़े व्यापारी है, उनके घर जाना है। दवे साहेब से एड्रेस प्राप्त कर लेना और आप दोनों वहाँ पहले पहुँच जाना। उन्हें बातें करना, आनंद कराना; फिर मैं बाद में आऊंगा। शाम को ठाकुरजी का भोग वहीं था। करीब 5 बजे मैं और कोठारीस्वामी थ्री व्हीलर में निकले। उस समय सोखड़ा का रोड भी कैसा था? थ्री व्हीलर धीरे-धीरे चल रहा था और गुलाम वाला विचार दिमाग में से गया नहीं था। कोठारीस्वामी से मैंने पूछा कि स्वामी, आज आपको कौन-सी बात बहुत पसंद आई। तो, इन्होंने मुझे सामने से पूछा कि तुझे क्या बात पसंद आई? मैंने कहा कि जब हम दोनों की आँख एक हुई, वो बात मुझे बहुत पसंद आई। लेकिन ऐसा विचार आता है कि वो बात जीवन में कैसे साकार हो? अभी तो आपके पास दासत्वभाव से जो वर्तना है, वो मैं वर्त नहीं पाता हूँ। तो, गुलाम बनने की बात कैसे होगी? **कभी-कभी स्वामीजी के समक्ष भी बुद्धि चल पड़ती है।** कोठारीस्वामी भी कहने लगे कि तेरी ये बात तो सच है। मेरे दिमाग में भी यही विचार चल रहा है। ये बातें करते-करते रास्ता कटता जा रहा था। तो, रास्ते में **कोठारीस्वामी** को महाराज ने प्रेरणा की कि ये बात*

ऐसी है कि ***वचनामृत में स्वामिनारायण भगवान ने कहा कि भगवान का निश्चय भगवान स्वयं कराते हैं, तब होता है****—ऐसा उन्होंने बताया। तब मेरे साक्षी ने मान लिया कि ये सही बात है, ऐसी ही बात है।* ***उस समय ऐसा विचार भी आया कि भगवान को हमारे लिये कब ऐसा हो कि मेरे बेटे को और मेरे समाज को यथार्थ निश्चय हो।*** *ये बात करते-करते हम दोनों पंजाबी फॅमिली के घर पहुंचे। वहाँ सबको जय स्वामिनारायण करके बैठे। खुली जगह पर एक झूले पर स्वामीजी के बैठने की व्यवस्था की थी। हम लोग चेयर पर बैठे थे। उनके साथ थोड़ी बात करी, लेकिन हमारे दिमाग में फिर वही गुलाम वाली बात घूमने लगी कि क्या करें? थोड़ी देर में स्वामीजी पधारे। वे हमें देख कर खूब हंसे, खूब हंसे, खूब हंसे।* ***ये लोग अंतर्यामी और सर्वज्ञ पुरुष हैं। ऐसा नहीं मानना कि इन्हें कुछ पता नहीं है। इन्हें सब कुछ पता है और सब कुछ जानते हैं।*** *जो होने वाला है वो भी पता है और इनके संकल्प से क्या हो गया है वो भी मालूम है। तो, स्वामीजी जिसके घर गये थे, उनके साथ थोड़ी बातचीत हुई। फिर उन्होंने हमसे पूछा—क्या चल रहा है? तब हमने कहा—स्वामीजी, आज सुबह आपने जो बात बताई कि एक बार गलती से भी जो स्वामिनारायण बोले, उसका गुलाम बनना। तो, वो कैसे हो सकता है?* ***अभी हम आपके पास गुलाम की तरह वर्तन नहीं कर पाते हैं, तो एक बार जो स्वामिनारायण बोले उसके पास तो कैसे वर्त पायेंगे? लेकिन कोठारीस्वामीजी में से आप बोले हो कि भगवान का निश्चय भगवान स्वयं कराते हैं, वो बात सही है। तो स्वामीजी एकदम बोले—*** *There you are, कभी-कभी स्वामीजी ऐसा बोलते थे। फिर हाथ जोड़कर हमने दोबारा पूछा— भगवान को ऐसा विचार कब आयेगा कि मुक्त को ऐसा निश्चय कराना है? यह सुन कर स्वामीजी बहुत हंसे और फिर उन्होंने तीन बातें बताईं, जो हमें पकड़नी हैं। वो बात मैंने पकड़ी हुई है, इसलिये मैं आपको बताता हूँ।*

स्वामीजी *ने कहा—*

पहली बात*—हमने हरिधाम में शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की मूर्ति पधराई है, तो इनके पास बैठकर या प्रदक्षिणा करते-करते बापा की स्मृति के साथ बहुत भजन करना है। मेरा ये कहना है कि हम जब भजन करें, तो गुरुजी को याद करके करें। इनका बोलना, चलना, खाना, काढ़ा पीना सब याद करके धुन करना, आधा घंटा कैसे पूरा हो जायेगा वो पता ही नहीं चलेगा। तो, स्वामीजी ने जैसे कहा वैसे हमें भजन करना है।*

दूसरी बात*—भगवान स्वामिनारायण ने* ***कारियाणी के 12 वचनामृत*** *के आख़िरी पैराग्राफ*

में कहा है कि भगवान पुरुषोत्तम की बात का यदि हम विश्वास और प्रीति के साथ मनन-चिंतन करते हैं, तो किसी भी साधन से जो मन निर्विकार नहीं होता, वो इतना ही करने से हो जाता है। ***भावना से, मतलब विश्वास और प्रीति के साथ हमें कथा-वार्ता का मनन-चिंतन, जुगाली करनी है।***

तीसरी बात *— हम सब बापा के साथ प्रीति-हेत से जुड़े हैं। इसका लक्षण ये है कि सेवा ही किया करते हैं और वो ही करनी है तथा वो सेवा मध्य 28, मध्य 41, मध्य 63 वचनामृत के अनुसार करनी है। यदि ये तीन combination honestly और sincerely अपने जीवन में रखेंगे, तो फिर जैसे स्वामीजी ने बताया कि तब बड़े पुरुष संकल्प करते हैं और उसे यथार्थ निष्ठा हो जाती है। फिर स्वामीजी ने बताया कि वो कैसे होता है? तो, जब संकल्प करते हैं, तो जितनी देर में हथेली पलटते हैं, उतनी ही देर में हो जाता है। इसमें कोई साधन या साधना काम नहीं आती है। जब उन्हें लगेगा कि इस मुक्त को यथार्थ निश्चय हो जाये, तो उसी क्षण हो जायेगा। आज हम बहुत बड़े* ***भाग्यशाली*** *हैं कि ऐसे गुणातीत संत की गोद मिली है। मुझ पर स्वामीजी महाराज, काकाजी महाराज की बड़ी कृपा है कि उन्होंने मुझे बहुत पहले से गुरुजी की गोद में बिठा दिया। इनके साथ रहने का बहुत मौका मिला है। इनकी सेवा तो कैसी की है, वो मैं जानता हूँ। लेकिन इनके पास से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला है। इनका स्वभाव ऐसा नहीं था कि किसी को प्यार करें, मैं सही कहता हूँ। पर, आज वे पूरे 180 डिग्री change हो गये हैं, यह कई साल से मैं देखता हूँ। तो, इनके प्यार में हम बह रहे हैं। पर, यदि इनके प्यार का ऋण अदा करना हो, तो ये बात पकड़नी होगी। हम सुखी तो हैं — रोटी, सब्जी, दाल, चावल खाने को मिलता है। अरे! जंगल में कुत्ता अकेला होगा, तो भी उसे खाना मिलता है, वो बड़ी बात नहीं है।* ***सुख हमारे हृदय में है और ये सत्पुरुष जब संकल्प करेंगे तभी बाहर आयेगा। इसके लिये ये बात हमें पूर्ण विश्वास के साथ पकड़नी होगी कि जो एक बार स्वामिनारायण का नाम ले, उसका गुलाम बनना है।***

❖ *निष्कुलानंदस्वामी पूर्वाश्रम में लालजी सुथार थे और इनकी ससुराल कच्छ में थी।* ***भगवान स्वामिनारायण*** *एक बार जब सौराष्ट्र से कच्छ में जा रहे थे, तो रास्ता दिखाने के लिये इन्हें साथ ले जा रहे थे। महाराज की चाल बहुत अलग-सी थी। आगे महाराज चलते थे, पीछे संत और फिर सेवक। जब गांव में से गुज़र रहे थे, तो महाराज को देख कर एक मुमुक्षु को विचार आया कि उनकी कितनी मतवाली चाल है! तो लालजी सुथार से पूछा कि ये*

*भाईसाहब कौन हैं? वे बोले—**हमारे भगवान स्वामिनारायण हैं।** महाराज के कानों में वो बात गई, तो तुरंत घूमकर महाराज खड़े हो गये और उन्होंने मुमुक्षु को दंडवत् प्रणाम किया। लालजी सुथार (निष्कुलानंदस्वामी) तो विचार में चले गये कि महाराज ने ये क्या लीला करी? फिर वहाँ से चले तो रास्ते में पूछा कि महाराज, आपने ये क्या लीला करी? तब महाराज ने कहा कि आपने उसे ये बताया कि हमारे भगवान स्वामिनारायण हैं, तो उस नाते उनका हमसे संबंध हो गया ना! सोचिये, ये कैसी बात है?*

❖ *2015 की दीवाली के दिनों में **स्वामीजी** ने सुबह श्रृंगार आरती में हम सबको बैठा कर एक बात कही कि हरिधाम में जो नीम के पेड़ हैं, वो हमसे कई गुना बड़े हैं। देखा जाये तो पेड़ हमसे टकराने वाले नहीं हैं, तो हम ये बात मानेंगे? लेकिन उनके कहने का तात्पर्य था कि **संबंध वाला यदि नीम जैसे कड़वे स्वभाव का हो, यदि उसे बड़ा मानेंगे तभी साधना की कुछ शुरुआत होती है।** इससे आगे स्वामीजी ने बताया कि हरिधाम की सभी गायें अनंत गुनी बड़ी हैं। बुद्धि बंद हो जाये ऐसी बात है। पर, उनके वे शब्द अभी भी कान में गूंजते हैं। गाय से हमारा टकराव नहीं होगा, लेकिन **जब सींग वाली गाय की तरह सिर घुमाने वालों से ऐसा ही प्यार करेंगे, जैसा अपने पसंदीदा से करते हैं, तब ही (सत्पुरुष से) संबंध की शुरुआत होती है।** इससे आगे भी स्वामीजी ने जो बताया था, वो अभी भी समझ में नहीं आता है। तो, गुरुजी के समक्ष ये बात इसलिये कर रहा हूँ कि आशीर्वाद वे दें। स्वामीजी ने कहा कि जब गायों के पास खड़े हुए हों, तो **हमें अपना अस्तित्व भूल जाना चाहिए।** गुरुजी, सही कहता हूँ आशीर्वाद दीजियेगा। स्वामीजी की आंतरिक इच्छा थी कि हम सबका जीवन ऐसा बने। **संबंध वाला बहुत बड़ा, बहुत बड़ा, बहुत बड़ा, इसके पास हम कुछ नहीं।***

*भगवान स्वामिनारायण ने संबंध की यह बात वचनामृत में बताई है। **काकाजी को पाँच वचनामृत बहुत पसंद थे—***

***गढडा प्रथम 24** के आख़िरी पैराग्राफ में महाराज ने कहा है कि सत्संग में शोभे नहीं ऐसा जिसका स्वभाव हो, लेकिन वो सत्संग में तो है, उसका ऐसा अतिशय गुण लें। सबसे **अतिशय गुण हमें हमारी देह का होता है, दूसरा हमारी मान्यता, हमारी सत्ता, हमारी समझ का होता है। इसे हम छोड़ नहीं सकते हैं।** पर, महाराज ने कहा कि सत्संग में न शोभे ऐसा जिसका स्वभाव हो, तो भी उनका अतिशय गुण लेना है—ये संबंध कैसे होगा? सच, बहुत बड़ी बात है।*

__गढडा प्रथम 58__ के आख़िरी पैराग्राफ में महाराज ने कहा है कि भगवान के अल्प संबंध वाले के पास उनके दास का गुलाम बनना है।

__गढडा मध्य 25__ के आख़िरी पैराग्राफ में महाराज ने कहा है कि मानो किसी के घर में एक मन-40 किलो अनाज है और आगे बढ़ते-बढ़ते इतना हो जाये कि समग्र पृथ्वी का राजा बन जाये और त्यागी में भगवान जैसा ऐश्वर्य आ जाये, लेकिन पहले दिन सत्संग में कैसा दीन बन कर आये थे, वैसा ही भाव सब ऐश्वर्य-प्रताप मिलने पर हो। अर्थात् दास के दास बन जायें, वो महाराज को बहुत पसंद है।

__गढडा अंत्य. 11__ का आख़िरी पैराग्राफ और __गढडा अंत्य. 26__ के वचनामृत का आख़िरी पैराग्राफ में महाराज ने कहा है कि जो सत्संग में कुछ न समझता हो, अल्प संबंध वाला हो उसके समक्ष भी हम तुच्छ हैं, यह बात यदि जीवन में पकड़ी जाये, तो कुछ करना शेष नहीं रहता है। __एक बात पक्की है ये सत्पुरुष मिले हैं तो करायेंगे ही, हमें बड़ा भरोसा है। यह भरोसा रखना है और इसके साथ भजन करना है। इस भरोसे के साथ सेवा करनी है और कथा-वार्ता का मनन-चिंतन करना है।__

गुरुजी, ये बात तो मैंने मेरे लिये आपके चरणों में रखी है। तो, हमारी समझ में आये और जीवन में सहज बने, __संबंध वाले के पास हमारे अस्तित्व का विलीनीकरण हो। जो जीवन काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब दादा का देखा है और आज आपके पास दिखता है। जब आपके पास है, तो आपको देने में क्या हरज़ है? हम तो आपके हैं।__ तो, ऐसी कृपा बरसाना कि हमारा संबंध ऐसा हो, यही आपके चरणों में प्रार्थना के साथ सबको जय स्वामिनारायण।

प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने अपने इस वक्तव्य में **आठ बार भाग्यशाली** शब्द दोहराया है। जिसे लाल रंग से उभारा है। विचार करें कि इन स्वरूपों को प्रभु और उन्हें प्रगटाये गुरु के संबंध की कैसी महत्ता होगी, कैसा क़ैफ होगा! दूसरी ओर, इसके द्वारा **प.पू. प्रेमस्वामीजी ने ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी की स्मृति भी कराते हुए एहसास कराया कि वही तत्त्व आज उनमें रह कर अपने आश्रितों की परवरिश कर रहा है। 5 फरवरी 2012** को **गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार हीरकोत्सव** और **प.पू. गुरुजी के 75वें प्राकट्य दिन** की अंतिम सभा में सायं **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी** ने अपने आशीर्वाद में भक्तों के प्रति प.पू. गुरुजी के प्रेम, आत्मबुद्धि व प्रीति का वर्णन करते हुए **सात बार 'स्वार्थ'** शब्द को दोहराया था।

नूतन वर्ष के आगमन की इस सभा के अंत में **प.पू. गुरुजी** ने बहुत ही संक्षिप्त में, परंतु मुमुक्षुओं के लिये खूब प्रेरणादायी आशीर्वाद दिया। जिसे **प.पू. वशीभाई** ने Online तो सुना ही

और बाद में भी दो-तीन बार सुन कर दिल्ली मंदिर फोन करके कहा— *गुरुजी ने marvelous बात की है।*

सो, निम्न आशीर्वाद को पढ़ कर प्रभु से बल मांगे कि इस मार्ग पर हम अग्रसर हों...

...प्रेमस्वामीजी ने जो संबंध की बात करी और कहा भी कि ***ऐसा संबंध हमें मिला है और ऐसे संबंध में हम बैठे हैं, बात एकदम सही है। ये संबंध अवतार कोटि को मिलता नहीं है; जो हमें मिला है। ये बात हमारे दिमाग के अंदर फिट हो ऐसी नहीं है, क्योंकि स्थूलरूप से देखेंगे तो हमें तो अवतार कोटि ही महिमा इतनी अधिक लगती है कि मानो हम इनके समक्ष कुछ नहीं हैं;*** *ऐसा जो दिल में बैठ गया है, इस कारण ये संबंध की महिमा हमारे दिल को छू नहीं पाती। परंतु भले संबंध की महिमा हमारे दिल को स्पर्श करे या न करे; हम समझ पायें या न समझ पायें, पर इनके* ***संबंध वालों के बीच में हमें जो रखे हैं, उन मुक्तों के पास अपना देहभाव—हठ, मान और ईर्ष्या को न गिनें-छोड़ दें। मानो किसी से टकराव हुआ हो, फिर ऐसा मन में ठान लिया हो कि अब इसके सामने देखना ही नहीं है, वो छोड़ें और यदि नहीं छूट सकता हो, तो प्रार्थना करते रहें*** *कि—*

महाराज आप छुड़वा देना। मेरा मन तो करता ही नहीं-मन तो न ही करेगा, लेकिन ये सत्संग में जो बातें सुनी हैं, इसके कारण ऐसा ख्याल आता है कि यह करे बिना छुटकारा नहीं है, तो वो आप करवा देना।

अपने ऐसे बड़े संत तो इतने दयालु हैं कि हमारा प्रायश्चित् अपने सिर पर लेकर हमें उससे मुक्त करके हठ, मान और ईर्ष्या से परे करके, अक्षरधाम में बिठा देते हैं। ***आस्तिकभाव से इस process को समझें।*** *आस्तिकभाव यानि एक श्रद्धा-एक निष्ठा से समझ कर; हम इसी रास्ते पर* ***अग्रसर रहते रहेंगे, तो ज़रूर कामयाब हो जायेंगे।*** *महाराज हमें अक्षररूप-अक्षरस्वरूप कर देंगे और अक्षरधाम में हमेशा के लिये बिठा देंगे। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।*

सभा के विसर्जन के बाद सभी प्रसाद लेकर गये। **प.पू. गुरुजी देर रात्रि** को करीब साढ़े बारह बजे आराम में गये। लेकिन, **सुबह** पौने सात बजे **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी** संतों के साथ पंजाब जा रहे थे, तब प.पू. गुरुजी जग गये और अपनों को भावभरी विदाई दी... सच, ये प्रगट स्वरूप पल-पल अपने वर्तन से हमें सिखाते हैं कि किस प्रकार एक-दूजे की महिमा समझ कर अपने गुरु को राज़ी करना है। पर, हमारी ही कोई जड़ता है कि शंका-आशंकाओं के अपने दायरों को छोड़ने तैयार नहीं। हे प्रभु! अब किसी भी तरह हमें हमारी जीवदशा से बाहर निकाल दीजिये—ऐसी प्रार्थना...

23 नवंबर, सायं–प्रबोधिनी एकादशी निमित्त
प.पू. भरतभाई द्वारा हाट (शाकोत्सव) का उद्घाटन...

एक होकर कुटुंबभाव रहें, तो कलयुग में सतयुग प्रभु प्रगटायें...

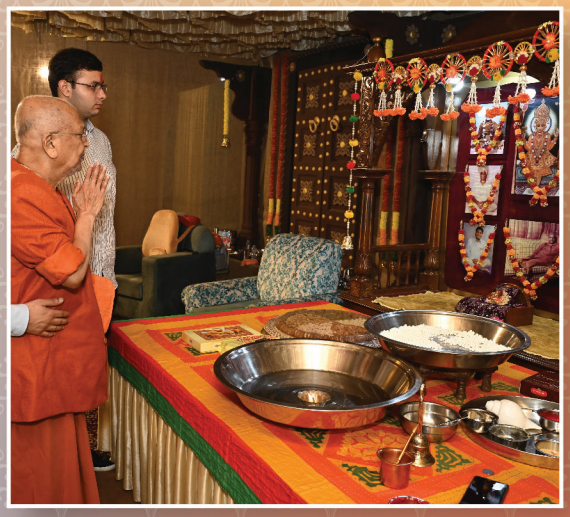

प्रगट प्रभु के संग आनंदोब्रह्म...

एक-दूजे के पूरक बनने का माध्यम हैं ये उत्सव...

सभी मुक्त पूरे साल इस दिन की राह देखते हैं...

23 नवंबर, हाट (शाकोत्सव)

पू. राकेशभाई शाह द्वारा रचित एक भजन में पंक्ति है—

लय और लीन रहूँ तुझमें, जीऊँ बन के तेरी खुश्बू... तुम्हीं गुरु मेरे, तुम्हीं हो प्रभु!

श्रीजी महाराज ने स्वामिनारायण संप्रदाय को उत्सवों की परंपरा की पूँजी इसलिये दी है कि उनके आश्रितों का हृदय हमेशा प्रभु की मूर्ति से भरा-भरा रहे, वे प्रभु में लय और लीन रहें। प्रायः हमारे गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों में नित्य नवीन उत्सव होते ही रहते हैं और सेवाओं के माध्यम से सब मुक्त एक-दूजे के पूरक बनना सीखते हैं। इससे अधिक प्रगट प्रभु के सान्निध्य में जब पूरा दिव्य कुटुंब इकट्ठा होकर आनंद करता है, तब मस्तिष्क पर पड़ी इन स्मृतियों की गहरी छाप अवकाश के समय भी सुख प्रदान करती हैं।

20 नवंबर को प.पू. गुरुजी एवं प.पू. प्रेमस्वामीजी की निश्रा में नूतन वर्ष पर सभी ने आशीर्वाद प्राप्त किये और फिर... दो दिन बाद ही यानि **23 नवंबर-प्रबोधिनी (देवउठी) एकादशी** निमित्त होने वाले **हाट** (**शाकोत्सव**) की तैयारियों में जुट गये। दो साल पहले इस अवसर पर हरिधाम के **प.पू. दासस्वामीजी** भी मौजूद थे और इस बार पवई से **प.पू. भरतभाई**, शिकागो के **पू. वंदनभाई** और **पू. पिन्टूभाई** के साथ दिल्ली मंदिर आये।

प.पू. गुरुजी ने इस बार हाट का नाम '**भायखला मण्डी**' नाम दिया था। यह नाम भी एक अनोखी स्मृति से जुड़ा था। **प.पू. गुरुजी** जब युवक (**दिलीपभाई**) थे और ताड़देव मंदिर आना-जाना शुरू किया था, तो मंदिर के पैसे बचाने के लिये वे **प.पू. सोनाबा** के साथ अकसर 'भायखला मण्डी' सब्जी लेने के लिये ताड़देव से पैदल भी जाते थे। सो, हाट (शाकोत्सव) के लिये मंदिर के पीछे के प्रांगण में की गई सजावट में सर्वप्रथम 'ताड़देव' से लेकर 'भायखला' तक का मार्ग दिखाता मानचित्र लगाया था और वहीं हाथों में सब्जियों के थैले लिये दो कटआउट लगाये थे। प.पू. सोनाबा के बनाये कटआउट पर उनकी मूर्ति और दूसरे कटआउट पर दिलीपभाई के रूप में प.पू. गुरुजी की मूर्ति लगाई थी। सायं 7 बजे प.पू. गुरुजी एवं प.पू. भरतभाई वहाँ पधारे और हाट का उद्घाटन करके कार्यक्रम शुरू किया। सेवकों ने खूब मेहनत करके **सब्जी मण्डी** का दृश्य बनाया था। जैसे किसी गाँव में मेला लगता है, ऐसा माहौल बना था। गुरुहरि काकाजी महाराज की प्रसादी का मंदिर स्थापित करके, दो सेवकों को वहाँ बिठाया था। वे सबको टीका करके प्रसाद देते थे। छोटे बच्चों के मनोरंजन के लिये दो ऊँट मंगाये थे, जिस पर सवारी करके वे खुश हुए। बंदर का खेल देख कर, गुब्बारों की निशानेबाजी करके बच्चे रोमांचित हुए। सब्जियों के stall के अलावा, आचार्य की खिचड़ी, गोल-गप्पे, दाल के वड़े, सेंकी हुई मकई,

चाय-कॉफी, मूंगफली-चिक्की इत्यादि के stall भी लगाये थे। Cash counter से token लेकर सबने ये प्रसाद लिया। इस प्रकार, प.पू. गुरुजी व प.पू. भरतभाई के सान्निध्य में सब्जी मण्डी जैसे शोरगुल में प्रति परिवार 4 किलो सब्जियाँ प्रसाद रूप लेकर, आनंद करके सब लौटे। जो भी एक बार इस उत्सव में आतें हैं, उन्हें प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में इतना अलौकिक एहसास होता है कि पूरे साल इस दिन की राह देखते हैं।

व्रतोत्सवसूची

1. दि. 9.12.'23, शनिवार – एकादशी, व्रत
2. दि. 16.12.'23, शनिवार – धनुर्मास प्रारंभ
3. **दि. 20.12.'23, बुधवार – ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज की प्राकट्य तिथि**
4. दि. 23.12.'23, शनिवार – एकादशी, व्रत
5. **दि. 31.12.'23, रविवार – प. पू. गुरुजी की निश्रा में रात्रि 10:00 बजे मध्यरात्रि महापूजा**
6. दि. 07.01.'24, रविवार – एकादशी, व्रत
7. **दि. 13.01.'24, शनिवार – लोहड़ी, प.पू. आनंदी दीदी का प्राकट्य दिन**
8. **दि. 14.01.'24, रविवार – मकर संक्रांति-भिक्षादान पर्व, धनुर्मास समाप्त**
9. दि. 21.01.'24, रविवार – एकादशी, व्रत
10. **दि. 25.01.'24, गुरुवार – पौषी पूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की दीक्षा तिथि**
11. दि. 26.01.'24, शुक्रवार – प्रजासत्ताक दिन
12. **दि. 03.02.'24, शनिवार – गुरुहरि काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन दिल्ली मंदिर का पाटोत्सव**
13. दि. 06.02.'24, मंगलवार – एकादशी, व्रत
    ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की स्वधामगमन तिथि
14. **दि. 14.2.'24, बुधवार – बसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती, सद्. निष्कुळानंदस्वामीजी, सद्. ब्रह्मानंदस्वामीजी एवं गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की जयंती**
15. **दि. 15.2.'24, गुरुवार – ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामीजी का प्राकट्य दिन**
16. **दि. 17.2.'24, शनिवार – अनादि महामुक्त गोपाळानंदस्वामीजी की प्राकट्य तिथि**
17. दि. 20.2.'24, मंगलवार – एकादशी, व्रत

R.N.I. 28971/77 ***(Air Mail)***
'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052